RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 290
दि. 21.02.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

'बबूल के कांटे' बोने वाले यूनुस के जाते ही भारत-बांग्लादेश के रिश्तों में पनपा नया प्यार

जीएनएस)। ढाका। भारत और बांग्लादेश के बीच रिश्तों में हाल ही में आई खटास को दूर करने की दिशा में एक बड़ा और ठोस कदम उठाया गया है। दिल्ली स्थित बांग्लादेश हाई कमीशन ने शुक्रवार को भारतीय नागरिकों के लिए सभी श्रेणियों की वीजा सेवाएं फिर से बहाल कर दी हैं। पिछले दो महीनों से यह सेवाएं बंद थीं और उनकी बहाली इस बात का संकेत देती है कि नई बांग्लादेश सरकार भारत के साथ तनाव को कम करने और आपसी संवाद को मजबूत करने के लिए गंभीर है। अब भारतीय नागरिक आसानी से पर्यटन, मेडिकल, बिजनेस और वर्क वीजा प्राप्त कर सकेंगे, जबकि पहले यह सुविधा केवल बिजनेस और वर्क वीजा तक ही सीमित थी। पड़ोसी देशों के बीच यह सुधार सिर्फ कागज-पत्तर का मामला नहीं है, बल्कि यह पिछले वर्षों में पैदा हुई जमीनी खटास को मिटाने की कोशिश का प्रतीक है। दिसंबर में भारत-विरोधी छात्र नेता शरीफ उस्मान हादी की हत्या के बाद बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा और लिंचिंग की घटनाओं ने दोनों देशों के बीच संबंधों में तनाव पैदा किया था। सुरक्षा कारणों से दोनों देशों ने अपनी वाणिज्य दूतावास और वीजा सेवाओं को रोक दिया, जिससे आम नागरिकों और व्यापारियों के लिए यात्रा कठिन हो गई थी।

भारत की ओर से भी इस कदम को सकारात्मक रूप में देखा जा रहा है। सिलहट में भारत के वरिष्ठ कांसुलर अधिकारी अनिरुद्ध दास ने पुष्टि की है कि अब बांग्लादेशी नागरिकों को मेडिकल वीजा और डबल-एंट्री वीजा जारी किए जा रहे हैं, और जल्द ही सामान्य यात्रा वीजा भी शुरू कर दिए जाएंगे। इससे यह स्पष्ट

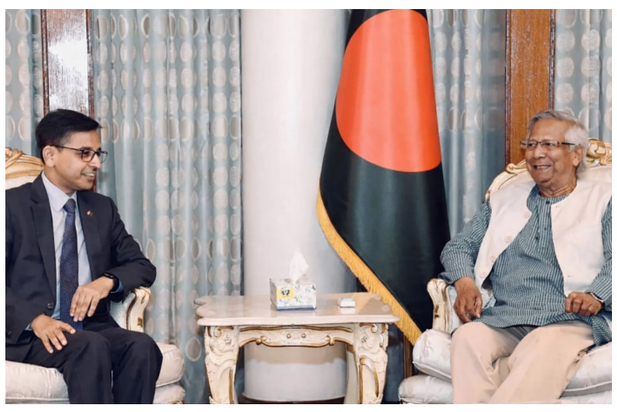

होता है कि नई दिल्ली भी पड़ोसी देश के साथ कूटनीतिक और सामाजिक संपर्क को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बांग्लादेश में नई सरकार का रुख भी स्पष्ट संकेत देता है कि भारत के साथ संबंध अब उनके लिए सर्वोच्च प्राथमिकता में शामिल हैं। प्रधानमंत्री के रूप में तारिक रहमान का पद संभालना इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जा रहा है। सत्ता में आते ही उन्होंने वीजा सेवाओं को बहाल कर यह संदेश दिया कि बीएनपी (BNP) भारत को एक भरोसेमंद साझेदार मानती है। पिछली अंतरिम सरकार के समय रही कड़वाहट और अनिश्चितता को पीछे छोड़ते हुए रहमान प्रशासन ने साफ तौर पर दिखाया कि पड़ोसी देश के साथ सहयोग और संवाद उनकी नीति की केंद्र में है। इस बहाली के महत्व को और बढ़ाता है यह तथ्य कि पिछले साल मुहम्मद यूनुस ने परंपरा तोड़ते हुए अपनी पहली विदेश यात्रा चीन के लिए चुनी थी, जिससे भारत-बांग्लादेश के संबंधों में खिंचाव आया था। यूनुस की इस प्राथमिकता के कारण कई कूटनीतिक मुद्दों पर तनातनी और असंतोष पैदा हुआ। अब यूनुस के जाने के बाद और रहमान के सत्ता में आने के साथ यह संभावना बढ़ गई है कि दोनों देशों के रिश्तों में स्थिरता और विश्वास का नया अध्याय शुरू हो।

लोकसभा स्पीकर ओम बिरला ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से तारिक रहमान को औपचारिक निमंत्रण भी भेजा है, जिससे यह संकेत मिल रहा है कि उनकी पहली विदेश यात्रा दिल्ली के लिए हो सकती है। यदि रहमान भारत आते हैं, तो यह केवल एक औपचारिक यात्रा नहीं होगी, बल्कि दक्षिण एशिया में भारत की रणनीतिक भूमिका को भी मजबूत करने और दोनों देशों के बीच विश्वास और सहयोग को बढ़ावा देने का बड़ा संकेत होगा।

विशेषज्ञों के अनुसार, इस कदम से न केवल कूटनीतिक रिश्तों में सुधार आएगा, बल्कि आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी दोनों देशों के नागरिकों को लाभ होगा। भारतीय व्यापारियों और छात्रों के लिए बांग्लादेश की यात्रा आसान होगी, वहीं बांग्लादेशी नागरिकों के लिए भारत में मेडिकल सुविधा, अध्ययन और पर्यटन में सहयोग बढ़ेगा। यह कदम दोनों देशों के बीच लंबे समय से चली आ रही शंकाओं और अविश्वास को कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा।

विशेष रूप से यह परिवर्तन संकेत देता है कि राजनीति और कूटनीति में बदलाव की आवश्यकता के बावजूद, भारत और बांग्लादेश के बीच गहरे रिश्ते और ऐतिहासिक जुड़ाव कायम हैं। दक्षिण एशिया की स्थिरता, आपसी सहयोग और आर्थिक विकास के लिए दोनों देशों के बीच सकारात्मक संवाद अनिवार्य है। तारिक रहमान की नई नीतियां, वीजा सेवाओं की बहाली और यूनुस के जाने के बाद रिश्तों में नया प्यार इस क्षेत्र में स्थायित्व और भरोसे का प्रतीक बन सकते हैं।

इस बहाली से दोनों देशों के नागरिकों में भी उम्मीद जगी है। व्यापार, शिक्षा, पर्यटन और चिकित्सा क्षेत्रों में खुलने वाले नए अवसर दोनों देशों की जनसंख्या के लिए सीधे लाभकारी होंगे। साथ ही यह कदम दिखाता है कि कूटनीति केवल सरकारों तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि जनता और सामान्य नागरिकों के जीवन में भी इसका सकारात्मक असर पड़ता है। अंततः यह स्पष्ट है कि यूनुस के जाने और तारिक रहमान के नेतृत्व में भारत-बांग्लादेश के बीच 'बबूल के कांटे' का समय धीरे-धीरे खत्म हो रहा है, और इसके स्थान पर भरोसा, सहयोग और आपसी सम्मान का नया अध्याय पनप रहा है। आने वाले महीनों में यह बदलाव दोनों देशों के बीच स्थायी और समृद्ध संबंधों की नींव रख सकता है, जो दक्षिण एशिया की सुरक्षा, विकास और स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण होगा।

सूरत मिलेनियम-2 मार्केट में आग, फायर ब्रिगेड की तत्परता से बड़ा हादसा टला

जीएनएस)। सूरत। शहर के व्यस्ततम कपड़ा व्यापार हब में एक बार फिर आग की घटना ने स्थानीय व्यापारियों और आम नागरिकों को चौंका दिया। मिलेनियम-2 मार्केट में अचानक आग लगने से परिसर में अफरा-तफरी मच गई, लेकिन फायर ब्रिगेड की तत्परता और सही समय पर किए गए कदमों के चलते संभावित बड़े हादसे को टाला जा सका। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, जैसे ही आग लगी, पूरे मार्केट परिसर में घना धुआं फैल गया। दुकानदारों और कर्मचारियों ने अपनी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तुरंत दुकानों से सामान बाहर निकालना शुरू किया। आग की वजह से हड़कंप मच गया और कई ग्राहक मार्केट से बाहर भागकर सुरक्षित स्थान पर पहुंचे। घटना की सूचना मिलते ही फायर डिपार्टमेंट को तुरंत अलर्ट किया गया। कुछ ही मिनटों में फायर ब्रिगेड की कई टीमें मौके पर पहुंचीं। आग की गंभीरता को देखते हुए फायर कर्मियों ने पानी की बौछार के साथ आग बुझाने का अभियान शुरू किया। फायर

ब्रिगेड की समय पर और सतर्क कार्रवाई के कारण आग पर जल्द ही नियंत्रण पा लिया गया। इस तत्परता ने न केवल लोगों की जान बचाई, बल्कि बड़े आर्थिक नुकसान को भी टाल दिया।

हालांकि आग लगने का सटीक कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। प्रारंभिक जांच में शॉर्ट सर्किट की संभावना जताई जा रही है, लेकिन संबंधित विभाग ने विस्तृत जांच शुरू कर दी है। मार्केट के आसपास के व्यापारी और कर्मचारी राहत की सांस लेते हुए फायर विभाग की तारीफ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर टीम थोड़ी देर और आती, तो नुकसान बहुत बड़ा हो सकता था।

शहर प्रशासन ने भी स्थिति पर नजर बनाए रखी और स्थानीय पुलिस ने सुरक्षा और शांति बनाए रखने के लिए मार्केट के आसपास के क्षेत्र को नियंत्रित किया। प्रशासन ने आग लगने के कारणों की पूरी जांच कराने का आश्वासन दिया है, ताकि भविष्य में ऐसे हादसों को रोका जा सके। मिलेनियम-2 मार्केट में आग लगने की यह घटना व्यापारियों और स्थानीय लोगों के लिए चेतावनी भी साबित हुई है। विशेषज्ञों का कहना है कि पुराने और व्यस्त व्यापारिक हब में नियमित रूप से फायर सुरक्षा उपायों की जांच और आग बुझाने की तैयारी रखना आवश्यक है। फायर विभाग ने भी आग बुझाने के दौरान अपने कर्मियों की सुरक्षा को ध्यान में रखा और किसी भी प्रकार की हताहत स्थिति से बचने के लिए आवश्यक उपाय किए। स्थानीय व्यापारियों ने फायर ब्रिगेड की तत्परता और पेशेवर रवैये की जमकर सराहना की। यह घटना यह भी दर्शाती है कि सूरत जैसे बड़े व्यावसायिक केंद्र में आग जैसी आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहना कितना महत्वपूर्ण है। फायर ब्रिगेड की समय पर कार्रवाई ने शहरवासियों और व्यापारियों की जान और आर्थिक संपत्ति दोनों की रक्षा की। वर्तमान में, मार्केट के अंदर सभी दुकानों और परिसर की स्थिति का निरीक्षण किया जा रहा है। बिजली और उपकरणों की जांच के साथ-साथ फायर सुरक्षा मानकों का आकलन किया जा रहा है। प्रशासन और फायर विभाग का मानना है कि इस घटना से आवश्यक सबक लेकर भविष्य में और अधिक सुरक्षित और तैयार रहना संभव होगा।

स्थानीय लोगों और व्यापारियों ने मिलकर आग लगने की घटना से सबक लेने और सुरक्षा मानकों को कड़ा करने की अपील की है।

राजकोट 108 एम्बुलेंस टीम की ईमानदारी बनी मिसाल घायल मरीज के कीमती सामान को सुरक्षित पहुंचाया

जीएनएस)। राजकोट। आपातकालीन सेवाओं में समर्पण और ईमानदारी की मिसाल पेश करते हुए राजकोट की 108 एम्बुलेंस टीम ने एक बार फिर अपने कर्तव्य और नैतिकता का परिचय दिया। हाल ही में जलाराम चौक के पास सड़क दुर्घटना में घायल हुए एक नागरिक को तत्काल उपचार देने के साथ-साथ उनका कीमती सामान सुरक्षित उनके परिजनों तक पहुंचाना इस टीम की कार्यप्रणाली और मानवता की जीवंत मिसाल बन गई है।

जानकारी के अनुसार, मनुभाई चावड़ा अपने एक्टिवा वाहन से घर की ओर जा रहे थे, तभी अचानक सामने से आए ऑटो रिक्शा से उनकी टक्कर हो गई। इस हादसे में वे गंभीर रूप से घायल हो गए और बेहोश अवस्था में सड़क पर गिर पड़े। हादसे की सूचना मिलते ही 108 एम्बुलेंस टीम तत्काल मौके पर पहुंची। टीम ने घायल व्यक्ति को सावधानीपूर्वक प्राथमिक उपचार देने के बाद उन्हें राजकोट सिविल हॉस्पिटल पहुंचाया।

इस दौरान मरीज की पहचान और जरूरी संपर्क साधने के लिए जांच की गई, जिसमें उनके पास से मोबाइल फोन और नकदी भी मिली। 108

एम्बुलेंस टीम ने यह कीमती सामान अस्पताल प्रशासन को सौंपा और परिजनों से तुरंत संपर्क कर जानकारी दी कि उनका सामान सुरक्षित है। इस पूरी प्रक्रिया में ईएमटी प्रग्नेशभाई परमार और पायलट सुरेशभाई परमार ने न केवल अपनी ड्यूटी निभाई, बल्कि जिम्मेदारी और ईमानदारी का शानदार उदाहरण भी पेश किया।

मरीज के परिजनों ने टीम की इस जिम्मेदार और मानवीय कार्यप्रणाली के लिए गहरी सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे कर्मी समाज के लिए प्रेरणा हैं और इनके समर्पण और ईमानदारी से ही आपातकालीन सेवाओं पर लोगों का भरोसा कायम रहता है। उन्होंने इस घटना को राज्यभर में ईमानदारी और मानवता की मिसाल बताया।

विशेषज्ञों और नागरिकों का कहना है कि ऐसे उदाहरण न केवल स्थानीय स्तर पर बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरक होते हैं। सड़क दुर्घटनाओं और अन्य आपातकालीन परिस्थितियों में एम्बुलेंस और आपातकालीन सेवाओं का सही समय पर पहुंचना मरीज की जान बचाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। वहीं, घायल व्यक्ति के कीमती सामान को सुरक्षित रखने का प्रयास टीम की नैतिक जिम्मेदारी और समर्पण को दर्शाता है।

राजकोट 108 एम्बुलेंस टीम की यह कार्यप्रणाली यह दिखाती है कि केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि मानवता, ईमानदारी और जिम्मेदारी भी आपातकालीन सेवाओं की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस तरह की घटनाएं समाज में विश्वास और सकारात्मक संदेश फैलाती हैं, जिससे नागरिकों में आपातकालीन सेवाओं के प्रति विश्वास और सम्मान बढ़ता है।

108 एम्बुलेंस टीम ने यह साबित किया कि गंभीर परिस्थितियों में भी टीमवर्क, त्वरित निर्णय क्षमता और नैतिकता एक साथ काम करने पर आश्चर्यजनक परिणाम सामने आते हैं। यह घटना सिर्फ राजकोट या गुजरात के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के आपातकालीन सेवा कर्मियों के लिए उदाहरण और प्रेरणा का स्रोत बन गई है।

इस घटना ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया कि आपातकालीन सेवा कर्मियों का काम केवल मरीज को अस्पताल तक पहुंचाना ही नहीं है, बल्कि उनकी सुरक्षा, व्यक्तिगत वस्तुओं की सुरक्षा और परिवार से संपर्क सुनिश्चित करना भी उतना ही आवश्यक है। राजकोट की 108 एम्बुलेंस टीम ने न केवल एक जीवन बचाया, बल्कि समाज में मानवता और ईमानदारी का मूल्य भी स्थापित किया।

इस पूरी घटना से यह संदेश मिलता है कि आपातकालीन सेवाओं में तकनीक और संसाधनों के साथ-साथ कर्मियों का समर्पण और नैतिकता भी उतना ही महत्वपूर्ण है। राजकोट 108 एम्बुलेंस टीम का यह काम आने वाले समय में अन्य राज्यों और शहरों के आपातकालीन कर्मियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा।

ब्रेन डेड रमेशभाई नरोला ने चार जरूरतमंदों को नई जिंदगी और रोशनी दी

जीएनएस)। सूरत। शहर में मानवता की एक और मिसाल सामने आई है, जिसने लोगों के दिलों को छू लिया है। डोनेट लाइफ संस्था के सहयोग से सीम्स हॉस्पिटल में 53 वर्षीय रमेशभाई वल्लभभाई नरोला के अंगदान की प्रक्रिया पूरी हुई, जिसने चार जरूरतमंदों को जीवन और रोशनी देने का अवसर प्रदान किया। ब्रेन हेमरेज के कारण ब्रेन डेड घोषित किए गए रमेशभाई ने अपनी लिवर, एक किडनी और दोनों आंखें दान कर एक नई उम्मीद जगाई।

कतारगाम निवासी रमेशभाई 18 फरवरी की रात अचानक चक्कर और बेचैनी की शिकायत के बाद अस्पताल ले जाए गए। प्रारंभिक जांच में उनके ब्लड प्रेशर में अत्यधिक वृद्धि पाई गई। सिम्स हॉस्पिटल में भर्ती होने के बाद डॉ. नरेन्द्र गडीया की देखरेख में सीटी स्कैन कराया गया, जिसमें ब्रेन हेमरेज की पुष्टि हुई। 19 फरवरी को मेडिकल टीम ने उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया।

रमेशभाई अक्सर अपने परिवार और मित्रों को अंगदान के महत्व के बारे में बताते थे और इसे "ईश्वरीय कार्य" मानते थे। ब्रेन डेड की स्थिति में उन्होंने अपने अंग दान की इच्छा स्पष्ट रूप से व्यक्त की थी। उनके इस निर्णय का सम्मान करते हुए उनकी पत्नी मधुबेन, पुत्र नेमिश और अन्य परिवारजन सहमत हुए। परिवार की सहमति के साथ डोनेट लाइफ के फाउंडर पद्मश्री निलेश मांडेलवाला के मार्गदर्शन में अंगदान की प्रक्रिया शुरू हुई।

इस प्रक्रिया के तहत लिवर को अहमदाबाद के डी अस्पताल भेजा गया, जहां 42 वर्षीय मरीज में सफल प्रत्यारोपण किया गया। किडनी का प्रत्यारोपण बड़ौदा के स्टर्लिंग

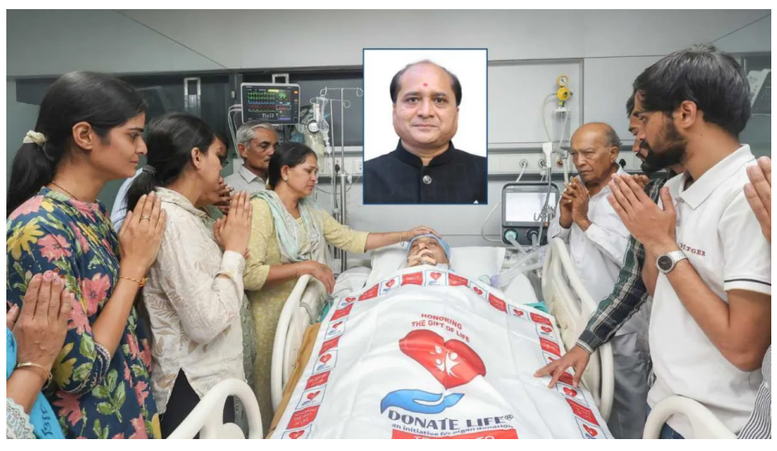

अस्पताल में किया गया, जबकि दूसरी किडनी चिकित्सीय कारणों से उपयोग में नहीं लाई जा सकी। रमेशभाई की आंखें लोक दृष्टि आई बैंक को प्रदान की गईं, जिससे दो दृष्टिहीन व्यक्तियों को नई रोशनी मिली। सूरत पुलिस ने इस प्रक्रिया को समय पर पूरा कराने के लिए ग्रीन कॉरिडोर बनाकर अहमदाबाद तक अंगों को तेजी से पहुंचाया। उल्लेखनीय है कि सूरत पुलिस अब तक 142 ग्रीन कॉरिडोर बनाकर अंगों और टिशू को देशभर में समय पर पहुंचाने में सहयोग कर चुकी है।

डोनेट लाइफ के माध्यम से अब तक 1375 अंग और टिशू दान किए जा चुके हैं, जिसमें 552 किडनी, 241 लिवर, 57 हृदय, 56 फेफड़े, 9 पैंक्रियास, 11 हाथ, 1 छोटी आंत और 448 आंखें शामिल हैं। इन अंगों और टिशू दानों से 1267 लोगों को देश और विदेश में नई जिंदगी और दृष्टि मिली है।

सूरत, जो पहले टेक्सटाइल और डायमंड सिटी के रूप में जानी जाती थी, अब "ऑर्गन डोनर सिटी" के रूप में भी पहचान बना रही है। रमेशभाई नरोला और उनके परिवार का यह निर्णय समाज के लिए प्रेरणादायक उदाहरण बन गया है। यह घटना लोगों को अंगदान के महत्व और जीवन को दूसरों के लिए संजीवनी देने की भावना के प्रति जागरूक करती है।

विशेषज्ञों का कहना है कि अंगदान केवल जरूरतमंदों की जिंदगी बदलने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज में मानवता, नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत करता है। रमेशभाई जैसे उदाहरण यह दर्शाते हैं कि व्यक्ति की सोच और सहमति से कितनी बड़ी सामाजिक और चिकित्सीय सहायता संभव है।

रमेशभाई के परिवार ने न केवल अपने प्रियजन की इच्छा का सम्मान किया, बल्कि समाज को यह संदेश भी दिया कि संकट की घड़ी में मानवता और उदारता सर्वोपरि होती है। अस्पताल के स्टाफ और डोनेट लाइफ के सदस्यों ने भी पूरी प्रक्रिया को व्यवस्थित और सुरक्षित रूप से संपन्न कर इसे सफल बनाया।

इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि सूरत जैसे शहर में लोगों की सामाजिक जिम्मेदारी और मानवीय योगदान की भावना बहुत मजबूत है। अंगदान के माध्यम से नए जीवन और रोशनी देने के इस प्रयास ने पूरे समाज में सकारात्मक संदेश फैलाया है।

रमेशभाई नरोला की यह मानवता की मिसाल न केवल उनके परिवार के लिए गर्व का विषय है, बल्कि पूरे शहर और देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गई है। समाज में जागरूकता बढ़ाने के लिए डोनेट लाइफ जैसी संस्थाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो रही है। इस प्रकार के योगदान से यह संदेश जाता है कि किसी की मृत्यु के बाद भी जीवन को दूसरों के लिए संजीवनी बनाया जा सकता है।

इस घटना ने न केवल चार जरूरतमंदों को नया जीवन दिया, बल्कि पूरे समाज में अंगदान के प्रति विश्वास और महत्व को भी मजबूत किया है। सूरत की जनता ने इस कदम की सराहना की है और इसे आने वाले समय में अन्य नागरिकों के लिए प्रेरणा माना जा रहा है।

संपादकीय

मुफ्त की महंगी कीमत

यह भारतीय लोकतंत्र की विडंबना ही कही जाएगी कि राजनीतिक दलों ने मुफ्त की योजनाओं को चुनाव जीतने का जरिया ही बना लिया है। मतदाताओं को चंद आर्थिक लाभ व सुविधाएं देकर मुफ्त की रेवड़ियों को सफलता का शॉर्टकट माना जाने लगा है। यही वजह है कि कुछ राज्यों में आसन्न चुनाव से पहले मुफ्त की योजनाओं की संस्कृति के वर्चस्व को देखते हुए देश की शीर्ष अदालत ने तल्ख टिप्पणी की है। जिससे यह मुद्दा एक बार फिर राष्ट्रीय विमर्श में शामिल हो गया है। उल्लेखनीय है कि अगले दो-तीन महीनों में देश के चार प्रमुख राज्यों असम, पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु में चुनाव होने जा रहे हैं। हालांकि, लोकतंत्र की कल्याणकारी अवधारणा के चलते लोकहित में चलायी जाने वाली जनहितकारी योजनाएं शासन का अनिवार्य स्तंभ भी रही हैं। लेकिन लक्षित समर्थन और चुनाव पूर्व दिखायी जाने वाली अतिरेक उदारता के बीच अंतर तेजी से धुंधला होता जा रहा है। देश की शीर्ष अदालत ने इस बाबत चेतावनी दी है कि मुफ्त की योजनाओं का अनियंत्रित विस्तार राज्यों के राजकोषीय अनुशासन को कमजोर कर सकता है। निस्संदेह, इस बारे में कोई दो राय नहीं हो सकती है कि राज्यों का यह प्राथमिक कर्तव्य है कि वे विशेष रूप से कमजोर वर्ग के लोगों की खास तौर से देखभाल करें। हालांकि, जब राजस्व घाटे वाले राज्य मुफ्त की योजनाओं पर बड़ी रकम खर्च करते हैं, तो सरकारी खजाने पर दबाव और अधिक बढ़ जाता है। विडंबना यह है कि जिस धनराशि का इस्तेमाल बुनियादी ढांचे में सुधार, स्वास्थ्य सेवाओं को सक्षम बनाने और शिक्षा की सुविधा को समृद्ध करने के लिये किया जाना चाहिए, वो राशि अल्पकालिक राजनीतिक लाभ के लिये खर्च कर दी जाती है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि राजनेता मुफ्त की बिजली, मुफ्त बस यात्रा और नकद राशि बांटने की होड़ में शामिल हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि लोकलुभावनवाद के आगे राजकोषीय विवेक कमजोर पड़ रहा है।

निस्संदेह, देश के सर्वोच्च न्यायालय ने इस बाबत तार्किक प्रश्न पूछा है कि राज्य मुफ्त की रेवड़ियां बांटने के बजाय रोजगार सृजन और कौशल विकास के लिये बजट प्रस्ताव क्यों नहीं पेश करते? इसमें दो राय नहीं कि रोजगार के नये अवसर पैदा करना जन साधारण के सशक्तीकरण का एक स्थायी रूप है। जो लोगों को स्वावलंबी बनाता है। वहीं दूसरी ओर वोटरों को लुभाने के लिये सत्तारूढ़ राजनीतिक दलों द्वारा लगातार जारी की जा रही मुफ्त की योजनाएं लोगों को अकर्मण्य बना देती हैं। लोग परिश्रम से आर्थिक उपलब्धि हासिल करने के बजाय सरकारी सुविधा पर अधिक निर्भर हो जाते हैं। जरूरत इस बात की है कि कौशल विकास के जरिये लोगों को इस तरह सक्षम बनाया जाए जिससे उन्हें दीर्घकालिक व स्थायी लाभ मिल सकें। निस्संदेह,चुनावी निष्पक्षता के लिये यह आवश्यक हो गया है कि चुनाव से पहले घोषित की गई या लागू की गई लोकलुभावनी नीतियों व योजनाओं की गहन पड़ताल की जाए। विपक्षी दलों द्वारा बिहार सरकार पर आरोप लगाया गया था कि पिछले साल अक्तूबर में आचार संहिता लागू रहने के दौरान मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत महिला लाभार्थियों को 15,600 करोड़ रुपये दिए गए थे। जो कि स्वस्थ लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विरुद्ध कदम था। निर्विवाद रूप से सत्तारूढ़ राजनीतिक दलों द्वारा इस तरह की सुनियोजित कोशिश विपक्षी दलों को निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा से वंचित करती है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि भारत के निर्वाचन आयोग की ओर से राजनीतिक दलों द्वारा मतदाताओं को अपरोक्ष रूप से रिश्वत देने के प्रयासों पर पैनी नजर रखी जाए। साथ ही इस दिशा में चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन के रूप में कार्रवाई भी करनी चाहिए। अब चाहे कोई बड़ा राजनीतिक दल इसमें शामिल क्यों न हो। निर्विवाद रूप से चुनाव प्रक्रिया में कोई भी पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाना हमारे जीवंत लोकतंत्र के लिये हानिकारक है। वहीं दूसरी ओर स्वस्थ लोकतंत्र के लिये जरूरी है कि देश का मतदाता परिपक्व व जिम्मेदार नागरिक की तरह व्यवहार करके लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त बनाने की दिशा में काम करे।

कल्पना नहीं, हकीकत है एआई की भारतीय दौड़

> भारत का 2023 में सातवें से तीसरे स्थान पर पहुंचना वैश्विक एआई दौड़ में तेज गति को रेखांकित करता है। सरकार का अनुमान है कि भारत में अगले दो वर्षों में 200 अरब डॉलर से ज्यादा का पूंजी निवेश एआई पर ही आएगा। अमेरिका और चीन के भारी पूंजी निवेश को देखते हुए यह प्रगति प्रशंसनीय है।

दिल्ली में गलगोटिया विवि के 'रोबोटिक डॉग' और 'ड्रोन सॉकर एरीना' के कारण हुई फज़ीहत के बाद कुछ लोग पूछ रहे हैं कि आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में भारत वास्तव में क्या कुछ कर भी पाएगा? हमारे पास उसके लिए पर्याप्त तकनीकी आधार और टेलेंट है भी या नहीं? बहरहाल, इस घटना ने सरकार समर्थित टेक्नोलॉजी प्लेटफॉर्मों पर स्वदेशी नवाचार की गलत व्याख्या की ओर देश का ध्यान आकर्षित किया है। सोशल-मीडिया के लिए ऐसी घटनाएं चटपटे मसाले की तरह होती हैं, कुछ समय तक याद रहती हैं और फिर बिसरा दी जाती हैं। बहरहाल, इस घटना ने हमें इसकी उपयोगिता और अपनी उपलब्धियों पर विचार करने की सलाह दी है।

इसके पहले जनवरी में दावोस सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष की प्रबंध निदेशक क्रिस्टालिना जॉर्जिवा की इस टिप्पणी को लेकर भी विवाद हुआ था कि भारत 'सेकंड-टियर' एआई पॉवर है। राजनीति-शास्त्री आयन ब्रेमर ने भी इस बात का हवाला देते हुए कहा था कि नए उभरते देशों को अमेरिका या चीन के साथ तालमेल बिठाना चाहिए। इन दोनों बातों का तीखा जवाब देते हुए भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, अश्विनी वैष्णव ने कहा, भारत एआई देशों की 'साफ पहली कतार' में है।

उन्होंने एआई आर्किटेक्चर की पांच परतों के रूप में वर्णित भारत की प्रगति का विवरण दिया : एप्लिकेशन, मॉडल, चिप, बुनियादी ढांचे और ऊर्जा के सभी पांच स्तरों पर 'भारत अच्छी प्रगति' कर रहा है। उन्होंने स्टैनफर्ड विवि की एक रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसमें भारत को एआई प्रवेश और तैयारियों में तीसरे स्थान पर और वैश्विक स्तर पर एआई प्रतिभा में दूसरे स्थान पर रखा गया है। बाद में आईएमएफ की अधिकारी ने इस विवाद को ठंडा करते हुए कहा कि संगठन भारत की एआई प्रगति के लिए

भारी प्रशंसा करता है। उन्होंने इस गलतफहमी के लिए मॉडरेटर को दोषी ठहराया।

अंतरिक्ष-विज्ञान, कंप्यूटिंग-सॉफ्टवेयर, बायोटेक्नोलॉजी, सेमी कंडक्टर, एआई और डेटा साइंस जैसी तकनीकों को 'हाईटेक' माना जाता है। इनका इस्तेमाल चिकित्सा (ईएचआर सिस्टम), विनिर्माण (रोबोटिक्स) और अनुसंधान (लैब डायग्नोस्टिक) के अलावा रक्षा-तकनीक और अंतरिक्ष-विज्ञान जैसे क्षेत्रों में प्रमुखता से होता है। स्टैनफर्ड यूनिवर्सिटी की 2025 ग्लोबल एआई वाइब्रेंसी रैंकिंग में भारत को अमेरिका और चीन के बाद तीसरे स्थान पर रखा गया है, जो लंबी छलांग है। नवंबर में जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत एक साल में ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर और जापान को पीछे छोड़ते हुए, चार पायदान ऊपर चढ़ गया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि नीति और शासन श्रेणी में भारत पांच पायदान फिसला भी है, जिस पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

भारत का 2023 में सातवें से तीसरे स्थान पर पहुंचना वैश्विक एआई दौड़ में तेज गति को रेखांकित करता है। सरकार का अनुमान है कि भारत में अगले दो वर्षों में 200 अरब डॉलर से ज्यादा का पूंजी निवेश एआई पर ही आएगा। अमेरिका और चीन के भारी पूंजी निवेश को देखते हुए यह प्रगति प्रशंसनीय है। रिपोर्ट इस बात पर प्रकाश डालती है कि दुनिया भर की सरकारें एआई निवेश बढ़ा रही हैं : कनाडा ने 2.4 अरब डॉलर, चीन ने 47.5 अरब डॉलर का सेमीकंडक्टर फंड लॉन्च किया है, फ्रांस ने 109 अरब यूरो का वादा किया है, भारत ने 1.25 अरब डॉलर की घोषणा की है, और सऊदी अरब का प्रोजेक्ट ट्रांसेंडेंस 100 अरब डॉलर के व्यापक प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है।

इन देशों के निवेश का कुछ हिस्सा भारत भी आएगा, क्योंकि भारत एआई के बड़े बाज़ार के रूप में विकसित हो रहा है। इसकी एक झलक दिल्ली में हुए एआई शिखर सम्मेलन में देखने को मिली, जिसमें 20 से अधिक राष्ट्राध्यक्ष, 60 मंत्री और 500 वैश्विक एआई लीडर शामिल हुए हैं। ग्लोबल साउथ में यह पहला वैश्विक एआई सम्मेलन है। इनमें फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज़ पेरेज़-कास्टेजोन और श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके के अलावा ओपनएआई के सीईओ सैम अल्टमैन, गूगल डीपमाइंड के सीईओ डेमिस हसाबिस और रिलायंस इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, मुकेश अंबानी और माइक्रोसॉफ्ट के अध्यक्ष ब्रैड स्मिथ जैसे बड़े औद्योगिक पदाधिकारी शामिल थे। इससे पहले ब्रिटेन, दक्षिण कोरिया और फ्रांस में ऐसे सम्मेलन हो चुके हैं। बेशक भारत के पास अभी एआई की उन्नत विनिर्माण-सामर्थ्य नहीं है, क्योंकि उसके लिए आवश्यक चिप्स का उत्पादन हमारे यहां अभी नहीं हो रहा है, पर देश का सेमीकंडक्टर मिशन बहुत तेजी से गति पकड़ रहा है, जो चिप्स उपलब्ध कराएगा।

एआई का मतलब केवल चिप्स निर्माण नहीं है। टेक्नोलॉजी का निर्माण करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत होगी, जो अपना समय लेगी। अलबत्ता उसका इस्तेमाल करने वालों और उससे जुड़े इंजीनियरों और डेटा सेंटरों की संख्या हमारी प्रगति को बता रही है। एआई शोधकर्ताओं की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। इसकी प्रदर्शनी में उद्योग जगत के लीडरों, स्टार्टअप्स, शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी प्रतिनिधियों और युवाओं की जैसी भीड़ आई, उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उत्सुकता का स्तर क्या है। हाल के वर्षों में देश की व्यवस्था में डिजिटाइज़ेशन ने भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ने के दरवाज़े खोले हैं।

इस बात को समझने की ज़रूरत है कि एआई केवल रोबोटिक्स या गेमिंग नहीं है। उसकी भूमिका चिकित्सकीय और वैज्ञानिक अनुसंधान में है, प्रशासनिक कार्यों में है, खेती-किसानी में है। भारत में 90 करोड़ से ज्यादा इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जो प्रतिदिन औसतन सात घंटे ऑनलाइन बिताते हैं। एनवीडिया, ओपन एआई, एंथ्रॉपिक और गूगल जैसी कंपनियां भारत में पैर जमाने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रही हैं। भारत सरकार प्रशासनिक और न्याय-व्यवस्थाओं को तेजी से प्रभावशाली बनाना चाहती है, जिसके लिए 'एआई-गवर्नेंस' के मॉडल सामने आ रहे हैं, वैसे ही जैसे देश ने 'डिजिटल-गवर्नेंस' को सफल बनाया।

भारत में एकसाथ कई भाषाओं में तत्काल अनुवाद करने वाले एआई मॉडल की ज़रूरत महसूस की जा रही थी। बेंगलुरु स्थित सर्वम एआई ने 18 फरवरी को दिल्ली में शिखर सम्मेलन के दौरान, चैटजीपीटी और डीपसीक जैसे अपने स्वयं के बड़े भाषा मॉडल विक्रम का अनावरण करके इस काम को पूरा कर दिखाया है। विदेशी मॉडलों के साथ भारतीय भाषाओं का मेल नहीं बैठ पाता है। टी-20 क्रिकेट विश्व कप के टीवी प्रसारण के दौरान चैटजीपीटी के विज्ञापन स्लॉट के पीछे की व्यावसायिक-योजना पर शायद आपने ध्यान नहीं दिया होगा। कई लोगों की अच्छे स्कूलों तक पहुंच नहीं है, एआई उनकी मदद करेगा। भारत के जुगाड़-विशेषज्ञ बहुत जल्द इनके किफायती और आसान तरीके निकाल लेंगे।

इंडिया एआई मिशन के तहत सरकार ने 38,000 जीपीयू को तैनात करने की योजना बनाई है, जो राष्ट्रीय स्तर पर साझा इंफ्रास्ट्रक्चर बनाएगी। इस साल एआई मिशन 2.0 के तहत 20,000 अतिरिक्त जीपीयू जोड़े जा रहे हैं, जिससे कुल क्षमता 58,000 जीपीयू हो जाएगी। जीपीयू या ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट शक्तिशाली कंप्यूटर चिप है जो मशीनों को तेज़ी से सोचने, छवियों को प्रोसेस करने, एआई प्रोग्राम चलाने, और जटिल कार्यों को सामान्य प्रोसेसर की तुलना में अधिक कुशलता से संभालने में मदद करता है। यह मिशन स्वास्थ्य, कृषि और सस्टेनेबल शहरों जैसे क्षेत्रों में एआई इनोवेशन को बढ़ावा दे रहा है।

भारत में एआई टैलेंट पूल 2027 तक 6 लाख से बढ़कर 12.5 लाख तक पहुंचने की उम्मीद है, लेकिन कंप्यूट पावर और फ्रंटियर मॉडल्स में अभी पीछे है। फिर भी, देश की विशाल जनसंख्या से उत्पन्न डेटा और युवा इंजीनियरिंग टैलेंट इस एआई रेस में हमें आगे रखेंगे।

प्रेरणा

तुलना छोड़कर अपने स्वभाव में आगे बढ़ने का सत्य

सुबह का समय था। आश्रम के चारों ओर फैली शांति में केवल पक्षियों की मधुर ध्वनि सुनाई दे रही थी। सूरज की किरणें पेड़ों की शाखाओं के बीच से छनकर धरती को एक नई ऊर्जा दे रही थीं। लेकिन उसी शांति के बीच एक शिष्य के मन में तूफान चल रहा था। वह कई दिनों से बेचैन था। उसके मन में एक ही प्रश्न बार-बार उठ रहा था—क्या वह कभी सफल हो पाएगा? क्या वह कभी दूसरों जितना महान बन पाएगा? आखिर एक दिन वह अपने गुरु के पास पहुंचा। गुरु आश्रम के एक कोने में बैठे ध्यान कर रहे थे। शिष्य उनके सामने बैठ गया और कुछ देर तक चुप रहा। फिर उसने धीरे से कहा, "गुरुदेव, मैं बहुत परेशान हूं। मैं जहां भी देखता हूं, मुझे लगता है कि हर कोई मुझसे बेहतर है। कोई मुझसे अधिक बुद्धिमान है, कोई अधिक तेज़ है, कोई अधिक सफल है। मैं जितना प्रयास करता हूं, उतना ही मुझे लगता है कि मैं पीछे छूट रहा हूं। मुझे समझ नहीं आता कि मैं कब आगे बढ़ूंगा।" गुरु ने उसकी बात ध्यान से सुनी। उनके चेहरे पर न कोई आश्चर्य था, न कोई चिंता। वे शांत थे, जैसे उन्हें पहले से ही यह प्रश्न पता हो। उन्होंने बिना कुछ कहे शिष्य को अपने साथ चलने के लिए कहा। दोनों आश्रम से निकलकर पास के जंगल की ओर बढ़ने लगे। जंगल में प्रवेश करते ही चारों ओर हरियाली और जीवन का अद्भुत दृश्य दिखाई दे रहा था। कुछ पेड़ बहुत ऊंचे थे, कुछ छोटे थे। कुछ पर फूल थे, कुछ पर फल। गुरु एक स्थान पर रुके, जहां एक विशाल साल का पेड़ खड़ा था और उसके पास एक छोटा सा आम का पेड़ था। आम के पेड़ पर छोटे-छोटे फल लगे हुए थे। गुरु ने शिष्य से पूछा, "तुम इन दोनों पेड़ों को देखकर क्या महसूस करते हो?" शिष्य ने साल के पेड़ की ओर देखते हुए कहा, "गुरुदेव, यह साल का पेड़ कितना महान है। यह बहुत ऊंचा है, बहुत मजबूत है। इसके सामने यह आम का पेड़ बहुत छोटा लगता है।" गुरु ने मुस्कुराते हुए कहा, "यह साल का पेड़ सौ वर्षों में इतना बड़ा हुआ है। इसने वर्षों तक धैर्य रखा, धीरे-धीरे बढ़ता गया, और आज यह इतना विशाल बन गया है। और यह आम का पेड़ केवल कुछ वर्षों का है, लेकिन यह पहले ही फल देने लगा है। यह लोगों को मिठास दे रहा है, पक्षियों को भोजन दे रहा है।" शिष्य ध्यान से सुन रहा था। गुरु ने आगे कहा, "अब सोचो, यदि यह आम का पेड़ साल बनने की कोशिश करे, तो क्या होगा? क्या यह अपने फल दे पाएगा?" शिष्य ने सिर हिलाया और कहा, "नहीं गुरुदेव, यदि यह केवल ऊंचा बनने की कोशिश करेगा, तो शायद यह अपने फल देना भूल जाएगा।" गुरु ने कहा, "और यदि साल का पेड़ आम बनने की कोशिश करे, तो क्या वह अपनी शक्ति और अपनी छाया बनाए रख पाएगा?" शिष्य ने कहा, "नहीं, वह अपनी पहचान खो देगा।" गुरु ने शांत स्वर में कहा, "यही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। हर एक का स्वभाव अलग है। हर एक का मार्ग अलग है। जब तुम दूसरों से तुलना करते हो, तब तुम अपने मार्ग को भूल जाते हो। तुम अपने भीतर की शक्ति को पहचान नहीं पाते।" शिष्य के मन में यह बात गहराई तक उतरने लगी। गुरु ने आगे कहा, "प्रकृति में कोई भी किसी से तुलना नहीं करता। नदी अपने मार्ग पर बहती है। वह यह नहीं सोचती कि पहाड़ उससे अधिक ऊंचा है। चंद्रमा यह नहीं सोचता कि सूर्य उससे अधिक चमकदार है। हर एक अपने स्वभाव में पूर्ण है।" शिष्य ने धीरे से पूछा, "लेकिन गुरुदेव, हम तुलना करना कैसे छोड़ सकते हैं? यह अपने आप हो जाता है।" गुरु ने कहा, "तुलना तब होती है जब तुम अपने मूल्य को दूसरों की उपलब्धियों से जोड़ते हो। जब तुम अपने भीतर देखते हो, जब तुम अपने प्रयासों पर ध्यान देते हो, तब तुलना समाप्त हो जाती है। तुम्हारा जीवन किसी और की नकल बनने के लिए नहीं है। तुम्हारा जीवन अपनी सच्चाई को जीने के लिए है।" यह सुनकर शिष्य की आंखों में नमी आ गई। उसे एहसास हुआ कि वह अब तक स्वयं के साथ अन्याय कर रहा था। वह अपने भीतर की विशेषता को नजरअंदाज कर रहा था और दूसरों की नकल करने की कोशिश कर रहा था। गुरु ने आगे कहा, "जब तुम एक बीज बोते हो, तो वह अपने समय पर अंकुरित होता है। तुम उसे खींचकर बड़ा नहीं कर सकते। यदि तुम ऐसा करोगे, तो वह नष्ट हो जाएगा। उसी तरह तुम्हारा विकास भी अपने समय पर होगा। तुम्हें केवल धैर्य रखना है और अपने स्वभाव के अनुसार आगे बढ़ना है।" यह बात शिष्य के हृदय में गहराई तक उतर गई। उस दिन के बाद शिष्य ने अपने दृष्टिकोण को बदलना शुरू किया। उसने दूसरों से तुलना करना छोड़ दिया। उसने केवल अपने प्रयासों पर ध्यान देना शुरू किया। अब वह हर दिन यह सोचता था कि वह अपने कल से कैसे बेहतर बन सकता है। धीरे-धीरे उसने अपने भीतर एक नई शांति महसूस की। अब उसे किसी से ईर्ष्या नहीं होती थी। अब वह दूसरों की सफलता देखकर दुखी नहीं होता था। बल्कि वह प्रेरित होता था। एक दिन उसने महसूस किया कि वह पहले से अधिक आत्मविश्वासी हो गया है। उसका मन अब स्थिर था। उसे अब अपने मार्ग पर विश्वास था। कुछ समय बाद गुरु ने उससे पूछा, "अब तुम्हें क्या अनुभव होता है?" शिष्य ने मुस्कुराकर कहा, "गुरुदेव, अब मैं समझ गया हूं कि मेरा मार्ग मेरा अपना है। मुझे किसी और जैसा बनने की आवश्यकता नहीं है। मुझे केवल अपने स्वभाव के अनुसार आगे बढ़ना है।" गुरु ने संतोष के साथ कहा, "जब तुम अपने स्वभाव को स्वीकार कर लेते हो, तब जीवन सरल हो जाता है। तब तुम्हें किसी से प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं होती। तब तुम्हारा हर कदम सही दिशा में होता है।"

शिष्य ने उस दिन अनुभव किया कि सच्ची शांति बाहर नहीं, भीतर होती है। सच्ची महानता दूसरों से आगे निकलने में नहीं, बल्कि स्वयं को पहचानने में होती है। उसने समझ लिया कि हर व्यक्ति का जीवन एक अलग यात्रा है। हर एक की गति अलग है। हर एक का उद्देश्य अलग है। तुलना केवल भ्रम पैदा करती है, जबकि स्वीकृति सच्ची शक्ति देती है। उस दिन के बाद शिष्य ने कभी स्वयं को कम नहीं समझा। उसने अपने स्वभाव को अपनाया, अपने मार्ग पर विश्वास किया, और निरंतर आगे बढ़ता रहा। और धीरे-धीरे, बिना किसी शोर के, बिना किसी तुलना के, वह अपने जीवन में वहां पहुंच गया, जहां उसे होना था। क्योंकि जब व्यक्ति अपने स्वभाव के अनुसार चलता है, तब उसका हर कदम उसे उसकी सच्ची महानता की ओर ले जाता है।

क्या है Pax Silica? इसमें शामिल होकर भारत ने कैसे चीन को बेचैन कर दिया है?

भारत ने आज अमेरिका के नेतृत्व वाली पहल पैक्स सिलिका से औपचारिक रूप से जुड़ते हुए एक अहम रणनीतिक कदम उठाया। नई दिल्ली में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के अवसर पर दोनों देशों ने पैक्स सिलिका डिक्लेरेशन पर हस्ताक्षर किए। इस घोषणा का उद्देश्य कृत्रिम बुद्धिमत्ता, सेमीकंडक्टर और महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं के क्षेत्र में भरोसेमंद और लचीला सहयोग तंत्र विकसित करना है। हम आपको बता दें कि पैक्स सिलिका अमेरिकी विदेश विभाग का प्रमुख ढांचा है, जिसका लक्ष्य प्रौद्योगिकी और औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र में भरोसेमंद साझेदारों का नेटवर्क बनाना है। घोषणा पत्र में आर्थिक सुरक्षा के लिए मजबूत आपूर्ति श्रृंखला की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है और कृत्रिम बुद्धिमत्ता को दीर्घकालिक वैश्विक समृद्धि का परिवर्तनकारी साधन बताया गया है। केंद्रीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस अवसर पर कहा कि भारत सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण में दीर्घकालिक चक्रवृद्धि विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि यदि यह सोच 1947 से निरंतर बनी रहती तो आज स्थिति अलग होती, लेकिन अब भी शुरुआत होने पर अगली पीढ़ियां इसका लाभ उठाएंगी। वैष्णव ने बताया कि भारतीय इंजीनियर उन्नत दो नैनोमीटर चिप डिजाइन पर काम कर रहे हैं। वैश्विक सेमीकंडक्टर उद्योग को लगभग दस लाख अतिरिक्त कुशल पेशेवरों की आवश्यकता होगी और भारत इस प्रतिभा आपूर्ति का प्रमुख केंद्र बन सकता है। छात्रों को विश्वस्तरीय चिप डिजाइन उपकरण निशुल्क उपलब्ध कराए जाने की बात भी उन्होंने कही।

इस अवसर पर बोलते हुए भारत में अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने इसे वैश्विक प्रौद्योगिकी व्यवस्था में एक निर्णायक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि भारत का संकल्प और आत्मनिर्भर मार्ग चुनने की इच्छा इस साझेदारी को विशिष्ट बनाती है। व्यापार समझौते से लेकर रक्षा और प्रौद्योगिकी सहयोग तक दोनों देशों के बीच असीम संभावनाएं हैं। अमेरिका के आर्थिक मामलों के उप सचिव जैकब हेलबर्ग ने इसे भू राजनीतिक संदर्भ में रखा। उन्होंने कहा कि यह पहल हथियारबंद निर्भरता और दबाव आधारित आपूर्ति श्रृंखलाओं को अस्वीकार करने का संदेश है। उन्होंने कहा कि आर्थिक सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा की तरह देखा जाना चाहिए। हम आपको बता दें कि घोषणा पत्र में ऑस्ट्रेलिया, ग्रीस, इजरायल, जापान, कतर, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, यूएई और ब्रिटेन जैसे देशों के हस्ताक्षर हैं। कनाडा, नीदरलैंड, यूरोपीय संघ, ओईसीडी और ताइवान जैसे प्रतिभागी भी इस ढांचे से जुड़े हैं। यह पहल खनिज उत्खनन से लेकर चिप निर्माण और एआई तैनाती तक पूरी प्रौद्योगिकी श्रृंखला को सुरक्षित करने की परिकल्पना करती है।

हाल में दोनों देशों के बीच अंतरिम व्यापार समझौता भी संपन्न हुआ, जिसने पुराने मतभेदों को दूर कर आर्थिक एकीकरण की आधारशिला रखी। इससे पहले भारत ने वाशिंगटन में आयोजित क्रिटिकल मिनरल्स मिनिस्टीरियल में भाग लेते हुए आपूर्ति श्रृंखलाओं में जोखिम कम करने और अत्यधिक केंद्रीकरण से बचने पर जोर दिया था।

देखा जाए तो भारत का पैक्स सिलिका से जुड़ना सामरिक दृष्टि से दूरगामी महत्व का कदम है। आज विश्व व्यवस्था में प्रौद्योगिकी शक्ति ही वास्तविक शक्ति का आधार बन रही है। सेमीकंडक्टर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और महत्वपूर्ण खनिजों पर नियंत्रण किसी भी राष्ट्र की आर्थिक और सैन्य क्षमता को प्रभावित करता है।

चीन और अमेरिका के बीच प्रौद्योगिकी प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को खंडित किया है। ऐसे समय में भारत का एक भरोसेमंद, लोकतांत्रिक तकनीकी गठबंधन का हिस्सा बनना उसे रणनीतिक लाभ देता है। इससे भारत को उन्नत चिप निर्माण, डिजाइन क्षमता और एआई अनुसंधान में निवेश तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के अवसर मिल सकते हैं।

इसके सामरिक निहितार्थ भी स्पष्ट हैं क्योंकि रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी प्रणालियों के लिए उन्नत चिप और एआई क्षमता अनिवार्य है। यदि भारत आपूर्ति श्रृंखला में विश्वसनीय भागीदार बनता है, तो उसे संवेदनशील प्रौद्योगिकी तक अधिक पहुंच मिल सकती है। इसके अलावा, महत्वपूर्ण खनिजों और सेमीकंडक्टर निर्माण में विविधीकरण से चीन पर निर्भरता कम करने की पश्चिमी रणनीति में भारत की भूमिका मजबूत होगी। साथ ही, हिंद प्रशांत क्षेत्र में शक्ति संतुलन के संदर्भ में यह साझेदारी भारत को आर्थिक और तकनीकी आधार प्रदान करेगी, जिससे वह अपने सामरिक हितों की रक्षा कर सके। आर्थिक सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ने की अमेरिकी सोच भारत के लिए भी प्रासंगिक है, क्योंकि आधुनिक युद्ध और भू राजनीति में डिजिटल अवसंरचना और डेटा केंद्र भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने पारंपरिक सैन्य साधन।

हालांकि चुनौतियां भी कम नहीं हैं। सेमीकंडक्टर निर्माण अत्यधिक पूंजी और तकनीकी परिशुद्धता मांगता है। यदि भारत को वैश्विक नेतृत्व का लक्ष्य पाना है तो उसे नीतिगत स्थिरता, अनुसंधान निवेश और कौशल विकास पर निरंतर ध्यान देना होगा। साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वह किसी एक ध्रुव पर अत्यधिक निर्भर न हो।

बहरहाल, पैक्स सिलिका में भारत की भागीदारी एक अवसर है, जिससे वह 21वीं सदी की तकनीकी व्यवस्था में सक्रिय निर्माता की भूमिका निभा सकता है। यह कदम भारत को केवल बाजार नहीं, बल्कि मानक निर्धारक और आपूर्ति श्रृंखला के केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में है। यदि इस पहल को दीर्घकालिक रणनीति और घरेलू सुधारों के साथ जोड़ा गया, तो आने वाले दशकों में भारत की आर्थिक और सामरिक स्थिति कहीं अधिक सुदृढ़ हो सकती है।

अभियान

उज्जैन महाकाल दर्शन से बदलता जीवन और भाग्य

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में कुछ ऐसे स्थान हैं, जहां केवल जाना ही व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल देता है। उन्हीं दिव्य स्थानों में से एक है महाकालेश्वर मंदिर, जो पवित्र नगरी उज्जैन में स्थित है। यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि समय, मृत्यु और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का ऐसा केंद्र माना जाता है, जहां पहुंचकर व्यक्ति स्वयं को एक अलग ही शक्ति से जुड़ा हुआ महसूस करता है। महाकाल का अर्थ है "काल के भी काल", अर्थात जो स्वयं समय और मृत्यु के भी स्वामी हैं। जब व्यक्ति इस सत्य को समझता है कि महाकाल के सामने काल भी नतमस्तक हो जाता है, तब उसके भीतर से मृत्यु का भय समाप्त होने लगता है और जीवन में एक नई निर्भीकता जन्म लेती है।

महाकालेश्वर बारह ज्योतिर्लिंगों में से एकमात्र ऐसा ज्योतिर्लिंग है, जो दक्षिण दिशा की ओर मुख किए हुए है। दक्षिण दिशा को यम की दिशा माना जाता है, जहां मृत्यु का शासन होता है। लेकिन महाकाल का दक्षिणमुखी होना इस बात का प्रतीक है कि वे मृत्यु के भी स्वामी हैं। वे केवल जीवन ही नहीं देते, बल्कि मृत्यु के भय से मुक्ति भी प्रदान करते हैं। जब कोई भक्त महाकाल के दर्शन करता है, तो वह केवल एक शिवलिंग को नहीं देखता, बल्कि वह उस अनंत शक्ति का अनुभव करता है, जो जन्म और मृत्यु दोनों से परे है।

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग को स्वयंभू माना जाता है, अर्थात यह किसी मनुष्य द्वारा स्थापित नहीं किया गया, बल्कि स्वयं प्रकट हुआ है। यह तथ्य ही इसे और अधिक रहस्यमयी और दिव्य बना देता है। कहा जाता है कि प्राचीन काल में इस क्षेत्र में दूषण नामक एक अत्यंत शक्तिशाली राक्षस था, जिसने साधुओं और भक्तों को अत्याचार से पीड़ित कर रखा था। जब अत्याचार अपनी सीमा पार कर गया, तब भगवान शिव ने स्वयं प्रकट होकर उस राक्षस का अंत किया और उसी स्थान पर महाकाल के रूप में विराजमान हो गए। यह घटना केवल एक राक्षस के अंत की नहीं थी, बल्कि अधर्म पर धर्म की विजय और भय पर विश्वास की विजय का प्रतीक थी।

महाकाल के दर्शन का सबसे बड़ा लाभ यह माना जाता है कि व्यक्ति के जीवन से अकाल मृत्यु का भय दूर हो जाता है। प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है कि जो व्यक्ति सच्चे मन से महाकाल की शरण में जाता है, उसका जीवन सुरक्षित हो जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा, बल्कि यह कि उसकी मृत्यु प्राकृतिक और नियत समय पर ही होगी। महाकाल अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और उन्हें अनावश्यक संकटों से बचाते हैं।

महाकालेश्वर मंदिर का महत्व केवल धार्मिक नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय और वैज्ञानिक दृष्टि से भी अत्यंत विशेष है। उज्जैन को पृथ्वी की नाभि कहा जाता है। प्राचीन काल में यह स्थान खगोल विज्ञान और गणित का केंद्र था। समय की गणना के लिए इस स्थान का विशेष महत्व था। यहां से होकर गुजरने वाली कर्क रेखा इस स्थान की ब्रह्मांडीय ऊर्जा को और अधिक प्रबल बनाती है। यही कारण है कि यहां ध्यान और साधना करने वाले साधकों को विशेष आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त होते हैं।

महाकाल के दर्शन का एक और गहरा आध्यात्मिक अर्थ है—अहंकार का अंत। जब व्यक्ति महाकाल के सामने खड़ा होता है, तो उसे यह एहसास होता है कि उसका अस्तित्व इस विशाल ब्रह्मांड में कितना छोटा है। उसका अहंकार, उसकी चिंताएं, उसके भय—सब कुछ उस दिव्य शक्ति के सामने तुच्छ हो जाते हैं। यही अनुभव व्यक्ति के भीतर विनम्रता और शांति को जन्म देता है।

महाकाल मंदिर का उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, जिनमें स्कंदपुराण और शिवपुराण प्रमुख हैं। इन ग्रंथों में महाकाल की महिमा और उनकी कृपा का विस्तृत वर्णन किया गया है। महान संस्कृत कवि कालिदास ने भी अपनी प्रसिद्ध कृति मेघदूतम में महाकाल का उल्लेख किया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि महाकाल की महिमा केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

महाकाल मंदिर की सबसे विशेष परंपराओं में से एक है भस्म आरती। यह आरती प्रातःकाल की जाती है और इसमें महाकाल का श्रृंगार भस्म से किया जाता है। भस्म इस सत्य का प्रतीक है कि अंततः हर भौतिक वस्तु भस्म हो जाती है। यह आरती व्यक्ति को जीवन की नश्वरता का बोध कराती है और यह सिखाती है कि केवल आत्मा ही शाश्वत है।

महाकाल के दर्शन से व्यक्ति के जीवन में केवल बाहरी परिवर्तन नहीं होता, बल्कि उसके भीतर भी एक गहरा परिवर्तन होता है। उसका दृष्टिकोण बदलने लगता है। वह जीवन को अधिक स्पष्टता और संतुलन के साथ देखने लगता है। उसके भीतर से भय समाप्त होने लगता है और उसकी जगह विश्वास और साहस जन्म लेते हैं।

उज्जैन में यह भी मान्यता है कि इस नगरी के वास्तविक राजा स्वयं महाकाल हैं। यहां कोई भी राजा या उच्च पदस्थ व्यक्ति रात में मंदिर के पास नहीं रुकता, क्योंकि यह स्थान केवल महाकाल का है। इतिहास में कई उदाहरण दिए जाते हैं, जहां बड़े पदों पर आसीन लोगों ने यहां रात्रि विश्राम किया और बाद में उनके जीवन में बड़े परिवर्तन हुए। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई और कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बी. एस. येदियुरप्पा के उदाहरण अक्सर इस संदर्भ में दिए जाते हैं। इन घटनाओं को लोग महाकाल की दिव्य शक्ति और उनकी सर्वोच्चता का प्रतीक मानते हैं।

महाकाल का एक और गहरा अर्थ है—समय का स्वामी। समय ही वह शक्ति है, जो सब कुछ बनाता है और सब कुछ नष्ट करता है। लेकिन महाकाल समय के भी स्वामी हैं। इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति महाकाल की शरण में जाता है, वह समय के भय से मुक्त हो जाता है। उसे भविष्य की चिंता नहीं रहती और न ही अतीत का पछतावा। वह वर्तमान में जीना सीख जाता है।

जब कोई भक्त महाकाल के मंदिर में प्रवेश करता है, तो उसे एक अद्भुत ऊर्जा का अनुभव होता है। मंदिर की घंटियों की ध्वनि, मंत्रों का उच्चारण, और वहां की आध्यात्मिक तरंगें व्यक्ति के मन को शुद्ध कर देती हैं। उसका मन शांत हो जाता है और उसकी आत्मा उस परम शक्ति से जुड़ जाती है।

महाकाल के दर्शन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक यात्रा है। यह यात्रा व्यक्ति को स्वयं से मिलाती है। यह उसे उसके वास्तविक स्वरूप का बोध कराती है। यह उसे यह समझने में मदद करती है कि वह केवल एक शरीर नहीं, बल्कि एक अमर आत्मा है।

जो व्यक्ति सच्चे मन से महाकाल की शरण में जाता है, उसका जीवन बदल जाता है। उसके भीतर एक नई शक्ति का जन्म होता है। उसके जीवन में आने वाली बाधाएं धीरे-धीरे समाप्त होने लगती हैं। उसका भाग्य जागृत होने लगता है।

महाकाल के दर्शन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति के भीतर से मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है। जब मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है, तब व्यक्ति वास्तव में जीना शुरू करता है। तब वह अपने जीवन को पूरी स्वतंत्रता और साहस के साथ जीता है।

अंततः महाकाल का संदेश यही है कि जीवन और मृत्यु दोनों एक ही सत्य के दो पहलू हैं। जो इस सत्य को समझ लेता है, वह भय से मुक्त हो जाता है। वह शांति और संतुलन के साथ जीवन जीता है।

महाकाल केवल एक देवता नहीं हैं, वे स्वयं समय हैं, स्वयं सत्य हैं, स्वयं अनंत हैं। और जो व्यक्ति उनके दर्शन करता है, वह केवल एक मंदिर नहीं देखता, बल्कि वह स्वयं अनंत का अनुभव करता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मातृभाषा के गौरव गान के साथ अन्य भाषाओं के प्रति आदर ही हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ मुख्यमंत्री ने विश्व मातृभाषा दिवस की पूर्व संध्या पर गांधीनगर में गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित मातृभाषा महोत्सव अंतर्गत साहित्य गौरव पुरस्कार प्रदान किए

▸▸ वर्ष 2024 का साहित्य गौरव पुरस्कार गुजराती भाषा के लिए श्री प्रवीण दर्जी को तथा कच्छी भाषा के लिए श्री मावजी महेश्वरी को प्रदान किया गया

▸▸ युवा गौरव पुरस्कार अंतर्गत गुजराती भाषा साहित्य के लिए श्री अजय सोनी को तथा कच्छी भाषा साहित्य के लिए श्री दीपक नंदा को वर्ष 2024 के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया

मुख्यमंत्री का 'विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात' के निर्माण से लीड लेने में मातृभाषा एवं संस्कृति के जतन-संवर्धन से योगदान देने का आह्वान

जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मातृभाषा दिवस के गरिमामय समारोह में स्पष्ट मत व्यक्त किया है कि मातृभाषा के गौरव गान के साथ अन्य भाषाओं के प्रति आदर ही हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति है।

इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि हमारी मातृभाषा 'अ' से शुरू होकर सबसे शीर्ष पर 'ज्ञ' यानी ज्ञान तक विस्तृत है। हृदय के भाव एवं संवेदनाओं को भाषा से प्रकट करने का हमारा प्रयास मातृभाषा के ऐसे समृद्ध ज्ञान द्वारा ही व्यक्त हो सकता है। उन्होंने जोड़ा कि हमारी भाषा एवं संस्कृति को जीवंत रखकर आगामी पीढ़ी तक पहुँचाना समय की मांग है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल विश्व मातृभाषा दिवस की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को गांधीनगर में गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा मातृभाषा महोत्सव अंतर्गत आयोजित साहित्य गौरव पुरस्कार समारोह के अवसर पर संबोधित कर रहे थे। समारोह में युवा, सेवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ राज्य मंत्री डॉ. जयराम गामित भी उपस्थित थे। 'माँ, मातृभूमि तथा मातृभाषा का कोई सानी नहीं है।' प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के इस कथन का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि मातृभाषा का गौरव करने वाला कोई भी व्यक्ति उनके लिए गौरवरूपी है।

इस अवसर पर उन्होंने वर्ष 2024 का साहित्य गौरव पुरस्कार गुजराती भाषा के लिए श्री प्रवीण दर्जी को तथा कच्छी भाषा के लिए श्री मावजी महेश्वरी को प्रदान किया। गुजरात साहित्य अकादमी द्वारा युवा लेखकों-साहित्यकारों को दिए जाने वाले युवा गौरव पुरस्कार अंतर्गत श्री अजय सोनी तथा श्री दीपक नंदा को वर्ष 2024 के क्रमशः गुजराती तथा कच्छी भाषा साहित्य के पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

मुख्यमंत्री ने मातृभाषा को सामूहिक अस्तित्व तथा स्वाभिमान का प्रतीक बताते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देशवासियों में ऐसा ही स्वाभिमान सोमनाथ स्वाभिमान पर्व तथा विरासतों व संस्कृति के पुनरुत्थान से जगाया है।

श्री पटेल ने विकसित भारत@2047 के प्रधानमंत्री के विजन में भी संस्कृति, भाषा एवं ज्ञान परंपरा के विशेष स्थान का उल्लेख किया। मुख्यमंत्री ने सभी मातृभाषाप्रेमियों, साहित्यप्रेमियों, लेखकों, रचयिताओं तथा प्रबुद्ध नागरिकों का आह्वान किया कि वे विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात के निर्माण से लीड लेने में मातृभाषा तथा संस्कृति के जतन-संवर्धन से योगदान दें।

इस अवसर पर गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री भाग्येश झा ने मुख्यमंत्री सहित सभी उपस्थित महानुभावों का शब्दों से स्वागत किया। समारोह में अकादमी द्वारा एक साथ लगभग 51 पुस्तकों का प्रकाशन किया गया।

इस कार्यक्रम में खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के विभाग के सचिव डॉ. राहुल गुप्ता, गुजरात साहित्य अकादमी के महामात्र डॉ. जयेन्द्रसिंह जादव, सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री माधव रामानुज, संगीतकार श्री श्यामल-सौमिल मुनशी तथा सुश्री आरती मुनशी, साहित्यकार श्री तुषारभाई शुक्ल एवं लोक गायक श्री कीर्तिदान गढवी सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार, भाषाप्रेमी व साहित्यप्रेमी उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे चलाएगी छह जोड़ी होली स्पेशल ट्रेनें,राजकोट - महबूबनगर स्पेशल के फेरे बढ़ाए गए

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा होली पर्व के दौरान यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे विशेष किराए पर छह जोड़ी स्पेशल ट्रेनें चलाएगी।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 09075/09076 मुंबई सेंट्रल – काठगोदाम साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल (10 फेरे)

ट्रेन संख्या 09075 मुंबई सेंट्रल – काठगोदाम स्पेशल प्रत्येक बुधवार को 10:55 बजे मुंबई सेंट्रल से प्रस्थान कर अगले दिन 14:30 बजे काठगोदाम पहुँचेगी। यह ट्रेन 25 फरवरी, 2026 से 25 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09076 काठगोदाम – मुंबई सेंट्रल स्पेशल प्रत्येक गुरुवार को 17:30 बजे काठगोदाम से प्रस्थान कर अगले दिन 21:00 बजे मुंबई सेंट्रल पहुँचेगी। यह ट्रेन 26 फरवरी, 2026 से 26 मार्च, 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, सूरत, वडोदरा, रतलाम, कोटा, गंगापुर सिटी, हिण्डौन सिटी, भरतपुर, अछनेरा, मथुरा, हाथरस सिटी, कासगंज, बदायूं, बरेली जं., बरेली सिटी, इज्जतनगर, बहेड़ी, किच्छा, लालकुआँ एवं हल्द्वानी स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकंड क्लास के कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 09185/09186 मुंबई सेंट्रल – कानपुर अनवरगंज साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल (12 फेरे)

ट्रेन संख्या 09185 मुंबई सेंट्रल – कानपुर अनवरगंज स्पेशल प्रत्येक रविवार को 10:55 बजे मुंबई सेंट्रल से प्रस्थान कर अगले दिन 15:35 बजे कानपुर अनवरगंज पहुँचेगी। यह ट्रेन 22 फरवरी, 2026 से 29 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09186 कानपुर अनवरगंज – मुंबई सेंट्रल स्पेशल प्रत्येक सोमवार को कानपुर अनवरगंज से 18:25 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 22:30 बजे मुंबई सेंट्रल पहुँचेगी। यह ट्रेन 23 फरवरी, 2026 से 30 मार्च, 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, सूरत, वडोदरा, रतलाम, कोटा, गंगापुर सिटी, भरतपुर, मथुरा, मथुरा कैंट, हाथरस सिटी, कासगंज, फर्रुखाबाद, कन्नौज एवं बिल्हौर स्टेशनों पर रुकेगी। ट्रेन संख्या 09185 का सूरत स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव होगा।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकंड क्लास के कोच होंगे।

3. ट्रेन संख्या 09023/09024 बांद्रा टर्मिनस – पालिताना साप्ताहिक स्पेशल (02 फेरे)

ट्रेन संख्या 09023 बांद्रा टर्मिनस – पालिताना स्पेशल 27 फरवरी, 2026 (शुक्रवार) को 21:45 बजे बांद्रा टर्मिनस से प्रस्थान कर अगले दिन 12:00 बजे पालिताना पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09024 पालिताना – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 01 मार्च, 2026 (रविवार) को 20:00 बजे पालिताना से प्रस्थान कर अगले दिन 12:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, वलसाड, सूरत, वडोदरा, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़ एवं सिहोर स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकंड क्लास के कोच होंगे।

4. ट्रेन संख्या 03418/03417 उधना – मालदा टाउन साप्ताहिक स्पेशल (08 फेरे)

ट्रेन संख्या 03418 उधना – मालदा टाउन स्पेशल प्रत्येक सोमवार को 12:30 बजे उधना से प्रस्थान कर बुधवार को 05:55 बजे मालदा टाउन पहुँचेगी। यह ट्रेन 02 मार्च से 23 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 03417 मालदा टाउन – उधना स्पेशल प्रत्येक शनिवार को 12:15 बजे मालदा टाउन से प्रस्थान कर सोमवार को 02:15 बजे उधना पहुँचेगी। यह ट्रेन 28 फरवरी, 2026 से 21 मार्च, 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में चलथान, व्यारा, नवापुर, नंदुरबार, डोंडाईचा, अमलनेर, भुसावल, इटारसी, पिपरिया, मदन महल, कटनी, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी, पं. दीन दयाल उपाध्याय, सासाराम, गया, तिलैया, नवादा, शेखपुरा, किऊल, अभयपुर, जमालपुर, सुल्तानगंज, भागलपुर, कहलगांव, साहिबगंज, बरहरवा एवं न्यू फरक्का स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकंड क्लास के कोच होंगे।

5. ट्रेन संख्या 09425/09426 साबरमती – हरिद्वार साप्ताहिक स्पेशल (10 फेरे)

ट्रेन संख्या 09425 साबरमती – हरिद्वार स्पेशल प्रत्येक सोमवार को 18:45 बजे साबरमती से प्रस्थान कर अगले दिन 20:30 बजे हरिद्वार पहुँचेगी। यह ट्रेन 23 फरवरी, 2026 से 23 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार – साबरमती स्पेशल प्रत्येक मंगलवार को हरिद्वार से 21:45 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 22:30 बजे साबरमती पहुँचेगी। यह ट्रेन 24 फरवरी, 2026 से 24 मार्च, 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, पिंडवाड़ा, जवाई बांध, फालना, रानी, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, गांधी नगर जयपुर, बांदीकुई, अलवर, रेवाड़ी, गुरुग्राम, दिल्ली कैंट, दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ सिटी, मुजफ्फरनगर एवं रुड़की स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकंड क्लास के कोच होंगे।

6. ट्रेन संख्या 09309/09310 इंदौर – हजरत निजामुद्दीन द्वि-साप्ताहिक सुपरफास्ट स्पेशल (20 फेरे)

ट्रेन संख्या 09309 इंदौर – हजरत निजामुद्दीन स्पेशल प्रत्येक शुक्रवार एवं रविवार को 17:00 बजे इंदौर से प्रस्थान कर अगले दिन 05:00 बजे हजरत निजामुद्दीन पहुँचेगी। यह ट्रेन 22 फरवरी, 2026 से 27 मार्च, 2026 तक चलेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09310 हजरत निजामुद्दीन – इंदौर स्पेशल प्रत्येक शनिवार एवं सोमवार को हजरत निजामुद्दीन से 08:20 बजे प्रस्थान कर अगले दिन 21:00 बजे इंदौर पहुँचेगी। यह ट्रेन 23 फरवरी, 2026 से 28 मार्च, 2026 तक चलेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में देवास, उज्जैन, नागदा, शामगढ़, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, भरतपुर एवं मथुरा स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकंड क्लास के कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 09575/09576 राजकोट – महबूबनगर साप्ताहिक स्पेशल का विस्तार

ट्रेन संख्या 09575 राजकोट – महबूबनगर स्पेशल को 30 मार्च, 2026 तक तथा ट्रेन संख्या 09576 महबूबनगर - राजकोट स्पेशल को 31 मार्च, 2026 तक बढ़ाया गया है।

केम-ओ-क्लेव 2.0: आई.आई. सी. एच. ई-पी. डी. ई. यू ने नवाचार और स्थिरता के माध्यम से उद्योग–शैक्षणिक सहयोग को सशक्त बनाया

जीएनएस)। गांधीनगर : पंडित दीनदयाल एनर्जी विश्वविद्यालय (PDEU) के रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग ने आई.आई. सी. एच. ई छात्र चैप्टर के सहयोग से सफलतापूर्वक केम-ओ-क्लेव 2.0: एक तकनीकी सम्मेलन का आयोजन किया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का उद्देश्य नवाचार, स्थिरता और उद्योग–शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा देना था। इस अवसर पर शिक्षाविदों, उद्योग विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को ज्ञान-विनिमय (आदान प्रदान) तथा व्यावसायिक विकास के लिए एक साझा मंच प्रदान किया गया।

"सक्षम" केंद्रीय थीम के अंतर्गत आयोजित इस सम्मेलन का उद्देश्य ऐसे दक्ष और भविष्य के लिए तैयार अभियंताओं का निर्माण करना था, जो बदलती औद्योगिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का प्रभावी समाधान कर सकें। कार्यक्रम की शुरुआत पंजीकरण और अतिथियों के स्वागत से हुई, जिसके पश्चात पारंपरिक दीप प्रज्वलन समारोह आयोजित किया गया, जो ज्ञान और विवेक की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है।

उद्घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के नेतृत्व और संकाय सदस्यों द्वारा विशिष्ट अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया गया। प्रो. राजेश पटेल एवं रजिस्ट्रार डॉ. रक्ष वीर जसरा (सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, रिलायंस) का स्वागत किया। डॉ. स्वप्निल धरास्कर ने श्री श्रेयान गुप्ता (निदेशक, गुजरात अंबुजा एक्सपोर्ट्स लिमिटेड) का स्वागत किया, जबकि रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग के प्रमुख डॉ. आशीष उन्नारकट ने श्री आलोक आर्य (प्रेसिडेंट लीगल एवं कॉर्पोरेट अफेयर्स, गुजरात अंबुजा एक्सपोर्ट्स लिमिटेड) का स्वागत किया। डॉ. शुभंकर रॉय ने श्री विजु विश्वनाथ (चीफ मैनेजर, इंडियन ऑयल लुब्रिकेंट्स विभाग, IOCL) का अभिनंदन किया।

समारोह को आई.आई. सी. एच. ई-पी. डी. ई. यू. के अध्यक्ष श्री मिलाप जोगीदास के संबोधन ने और समृद्ध किया। उन्होंने तकनीकी रूप से सक्षम, नैतिक रूप से उत्तरदायी और नवाचार-उन्मुख अभियंताओं के निर्माण में पेशेवर संगठनों की बढ़ती भूमिका पर प्रकाश डाला। उद्घाटन व्याख्यानों में आधुनिक रासायनिक अभियांत्रिकी की उभरती प्राथमिकताओं—विशेष रूप से स्थिरता, हरित रसायन और तकनीकी नवाचार—पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि केम-ओ-क्लेव 2.0: जैसे मंच अकादमिक शिक्षा और वास्तविक औद्योगिक अभ्यास के बीच की दूरी को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे विद्यार्थियों को व्यावहारिक चुनौतियों और उद्योग की अपेक्षाओं की स्पष्ट समझ मिलती है।

डॉ. स्वप्निल धरास्कर ने वर्तमान तीव्र परिवर्तनशील इंजीनियरिंग परिदृश्य में अंतःविषय सहयोग और निरंतर सीखने के महत्व पर मूल्यवान विचार साझा किए। कार्यक्रम का एक प्रमुख आकर्षण डॉ. राकेश वीर बसरा (सीनियर वाइस प्रेसिडेंट – रिफाइनरी एवं पेट्रोकेमिकल्स R&D, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड) का प्लेनरी व्याख्यान रहा। उन्होंने ऊर्जा क्षेत्र में स्थिरता और सुरक्षा पर चर्चा करते हुए ऊर्जा को आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति का गुणक बताया। उन्होंने उन्नत प्लास्टिक रीसाइक्लिंग तकनीकों, विशेषकर पी. ई . टी अपशिष्ट की ग्लाइकोलाइसिस प्रक्रिया, को परिपत्र अर्थव्यवस्था की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया।

उन्होंने यह भी कहा कि स्थिरता को केवल अनुपालन तक सीमित न रखकर औद्योगिक डिज़ाइन और संचालन की मूल दर्शन बनाना आवश्यक है।

एक अन्य प्रेरक सत्र में श्री श्रेयान गुप्ता ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं और उद्यमिता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने विद्यार्थियों को परंपरागत करियर विकल्पों से आगे बढ़कर नवाचार-आधारित सोच विकसित करने के लिए प्रेरित किया तथा अनुकूलनशीलता और सिस्टम थिंकिंग को आज के वैश्विक परिवेश में आवश्यक गुण बताया।

श्री विजु विश्वनाथ ने "आदर्श अभियंता की यात्रा" विषय पर एक संवादात्मक सत्र संचालित किया। उन्होंने विद्यार्थियों को तकनीकी दक्षता के साथ-साथ संचार कौशल, नैतिक मूल्यों और आजीवन सीखने की प्रतिबद्धता विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

अंततः, प्रभावशाली वक्ताओं और सार्थक तकनीकी चर्चाओं के साथ केम-ओ-क्लेव 2.0: ने उद्योग और शिक्षण संस्थानों के बीच सहयोग के महत्व को और अधिक सुदृढ़ किया। इस आयोजन ने प्रतिभागियों को पारंपरिक सीमाओं से आगे सोचने और रासायनिक अभियांत्रिकी के क्षेत्र में एक अधिक स्थायी और नवोन्मेषी भविष्य की दिशा में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

"फाल्गुन फेरी" के उपलक्ष्य में 01 मार्च को पालीताना से बान्द्रा के लिए चलेगी विशेष ट्रेन, टिकट बुकिंग 21 फरवरी से शुरू होगी

जीएनएस)। यात्रियों की सुविधा तथा "फाल्गुन फेरी" के अवसर पर पालीताना जैन मंदिर में होने वाली क्षद्धालुओं की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा विशेष किराये पर पालीताना और बान्द्रा टर्मिनस के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संचालन विवरण:

बान्द्रा टर्मिनस से पालीताना के लिए चलने वाली बान्द्रा-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन (09023) दिनांक 27 फरवरी, 2026 (शुक्रवार) को बान्द्रा टर्मिनस से रात्रि 21.45 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन दोपहर 12.00 बजे पालीताना पहुंचेगी।

इसी प्रकार वापसी में पालीताना-बान्द्रा सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन (09024) दिनांक 01 मार्च, 2026 (रविवार) को पालीताना से रात्रि 20.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन दोपहर 12.00 बजे बान्द्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सिहोर (गुजरात), सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, वलसाड, वापी एवं बोरीवली स्टेशनों पर ठहराव करेगी। ट्रेन में यात्रियों की सुविधा के लिए सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर क्लास एवं जनरल सेकेंड क्लास के कोच उपलब्ध रहेंगे।

बुकिंग संबंधी जानकारी :

ट्रेन संख्या 09023 एवं 09024 की बुकिंग दिनांक 21 फरवरी, 20206 (शनिवार) से सभी यात्री आरक्षण केन्द्रों तथा आईआरसीटीसी की आधिकारिक वेबसाइट पर शूरू होगी। यात्री ट्रेन के परिचालन समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने लापता व्यक्तियों की बढ़ती संख्या और व्यवस्था की उदासीनता पर चिंता व्यक्त की

जीएनएस)। (छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

देश भर में हर साल बड़ी संख्या में लोग लापता होते हैं और यह सिलसिला जारी है। इनमें से अधिकतर बच्चे, महिलाएं और लड़कियां होती हैं। इस साल जनवरी के पहले सप्ताह में अकेले दिल्ली से 800 से अधिक लोगों के लापता होने की खबर ने एक बार फिर इस समस्या की गंभीरता को उजागर किया है। फिर भी, हैरानी की बात यह है कि इस आपराधिक समस्या से निपटने के लिए कोई ठोस राष्ट्रीय प्रयास नहीं किया गया है। लापता व्यक्तियों का राज्यवार विश्लेषण भी बहुत कम उपलब्ध है। अब तक कितने लोग मिले हैं? और इन मामलों के पीछे कौन है, इसकी कोई जानकारी नहीं है। जरा सोचिए, अगर कुछ ही दिनों में अकेले दिल्ली से 800 लोग लापता हो गए, तो पूरे देश से कितने लोग लापता हुए होंगे?

शून्य त्रुटि एजेंसी

इस मुद्दे पर चिंता व्यक्त करते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार से देश के विभिन्न हिस्सों में लापता बच्चों की घटनाओं के पीछे किसी विशेष समूह की संलिप्तता की जांच करने को कहा है। इसके लिए, न्यायालय ने केंद्र सरकार को ऐसे मामलों की संख्या और सभी राज्यों द्वारा उठाए गए कदमों का विवरण एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने का निर्देश दिया है। जब सर्वोच्च न्यायालय ऐसा आदेश दे सकता है, तो क्या केंद्र सरकार का यह कर्तव्य नहीं था कि वह ऐसे कदम उठाए? यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने देशभर से लापता बच्चों से संबंधित आंकड़े एकत्र करने के लिए एक पोर्टल बनाया है, जहां सभी राज्य ऐसी घटनाओं का विवरण जमा कर सकते हैं। हालांकि, इस प्रक्रिया में सरकारी तंत्र की उदासीनता स्पष्ट है। केंद्र सरकार ने स्वयं सर्वोच्च न्यायालय में स्वीकार किया था कि कुछ राज्यों ने लापता बच्चों और संबंधित कार्यवाही से संबंधित आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए हैं। लेकिन केंद्र सरकार अदालत में ऐसा जवाब देकर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकती। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो (एनसीबी) की रिपोर्ट से इस समस्या की गंभीरता का अंदाजा लगाया जा सकता है, जिसमें कहा गया है कि 2023 में देशभर में 8 लाख से अधिक लोग लापता हुए। दिल्ली जैसे बड़े शहरों में यह समस्या विशेष रूप से गंभीर है। गुजरात में भी यह समस्या गंभीर है, जहां शहरों से लेकर गांवों तक लोगों के लापता होने की खबरें लगातार आती रहती हैं। खासकर छोटे बच्चों या लड़कियों की संख्या अधिक है। इसलिए, यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक राज्य अपनी जिम्मेदारी को समझे और लापता व्यक्तियों के मामलों में तत्काल कार्रवाई करे। यदि कोई लापरवाही पाई जाती है, तो संबंधित अधिकारियों को प्रणाली में जनता के विश्वास को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। और प्रणाली को उसकी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक करने के लिए कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए। अन्यथा, यह चक्र चलता रहेगा और प्रणाली गहरी नींद में सोई रहेगी।

पश्चिम रेलवे चलाएगी साबरमती और हरिद्वार के बीच होली स्पेशल ट्रेन

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा आगामी होली फेस्टिवल के दौरान, यात्रियों की मांग व सुविधा को ध्यान में रखते हुए साबरमती-हरिद्वार के बीच विशेष किराये पर स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है, साथ ही असारवा से आगरा केंट के लिए भी स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है। इन विशेष ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संख्या 09425/09426 साबरमती-हरिद्वार-साबरमती स्पेशल (10 फेरे)

ट्रेन संख्या 09425 साबरमती-हरिद्वार स्पेशल 23 फरवरी और 02,09,16,23 मार्च 2026 को साबरमती से 18.45 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 20.30 बजे हरिद्वार पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09426 हरिद्वार-साबरमती स्पेशल 24 फरवरी और 03,10,17,24 मार्च 2026 को हरिद्वार से 21:45 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 22:30 बजे साबरमती पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन महेसाणा, पालनपुर, आबूरोड, पिंडवाड़ा, जवाई बांध, फालना,रानी, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, गांधीनगर-जयपुर, बांदीकुई, अलवर, रेवाड़ी, गुड़गाँव, दिल्ली केंट, दिल्ली, गाजियाबाद, मेरठ, मुजफ्फरनगर एवं रुड़की स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर एवं सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 01920/01919 असारवा-आगरा केंट-असारवा स्पेशल (60 फेरे)

ट्रेन संख्या 01920 असारवा-आगरा केंट स्पेशल 19 फरवरी से 30 मार्च 2026 तक (मंगलवार और बुधवार को छोडकर) असारवा से प्रतिदिन 14.50 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 07.45 बजे आगरा केंट पहुंचेगी। इस तरह ट्रेन संख्या 01919 आगरा केंट-असारवा स्पेशल 18 फरवरी से 29 मार्च 2026 तक (सोमवार और मंगलवार को छोडकर) आगरा केंट से प्रतिदिन 18.10 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 11.10 बजे असारवा पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन हिम्मतनगर, शामलाजी रोड, डूंगरपुर, सेमारी, जावर, उदयपुर सिटी, राणा प्रताप नगर, मावली, चंदेरिया, मांडल गढ़, बूंदी, केशोराय पाटन, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, रूपबास और फतेहपुर सीकरी स्टेशनों पर रुकेगी।

ट्रेन संख्या 09425 की बुकिंग 21 फरवरी, 2026 से यात्री आरक्षण केन्द्रों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी तथा ट्रेन संख्या 01920 की बुकिंग शुरू है।

ट्रेनों के परिचालन समय, ठहराव और संरचना से सम्बंधित विस्तृत जानकारी के लिए यात्री www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे – रतलाम मंडल

इंजीनियरिंग विभाग : ई-टेंडरिंग सूचना

संख्या : W/623/5/1/NIT, दिनांक : 16.02.2026, मंडल रेल प्रबंधक/ मंडल कार्यालय (कार्यलेखा शाखा) पश्चिम रेलवे, रतलाम भारत के राष्ट्रपति की ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए ''खुली निविदा'' ई–निविदा के माध्यम से वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर आमंत्रित करते हैं। विवरण इस प्रकार है।

क्र. संख्या : 1, **ई–टेंडरिंग संख्या** : RTM-2025-26-186, **कार्य का नाम** : Ratlam-Improvement to water supply and sanitary system in old colony road no 4-7 and new colony road no 1-4, **अनुमानित लागत** : ₹ 1,80,80,019.56, **बयाना राशि** : ₹ 2,40,400.00, **निविदा खुलने की तिथि** : 12.03.2026. **क्र. संख्या** : 2, **ई–टेंडरिंग संख्या** : RTM-2025-26-187, **कार्य का नाम** : Ratlam Division - Providing 08 Nos Bore Well to increase the own water source in Railway Premises. (Composite Civil + Electrical, **अनुमानित लागत** : ₹ 31,21,103.24, **बयाना राशि** : ₹ 62,400.00, **निविदा खुलने की तिथि** : 12.03.2026.विस्तृत निविदा सूचना अर्हता शर्तें एवं अन्य शर्तें वेबसाइट **www.ireps.gov.in** पर उपलब्ध है।

ADM/5/1/464

Follow us on: twitter.com/WesternRly

1 अप्रैल से नेशनल हाईवे पर नकद नहीं, डिजिटल टोलिंग लागू

जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत सरकार ने 1 अप्रैल 2026 से नेशनल हाईवे टोल प्लाजा पर नकद लेनदेन पूरी तरह बंद करने की योजना पर मोहर लगाने की तैयारी शुरू कर दी है। इस कदम का उद्देश्य पूरे देश में डिजिटल टोलिंग प्रणाली को सुदृढ़ करना और यात्रियों के लिए टोल भुगतान को अधिक सरल, पारदर्शी और तेज बनाना है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि यह पहल इलेक्ट्रॉनिक टोल कलेक्शन के तहत मिली उपलब्धियों को और मजबूत करने और टोल प्लाजा संचालन की दक्षता बढ़ाने की दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है।

योजना लागू होने के बाद सभी टोल भुगतान केवल डिजिटल माध्यम से किए जाएंगे। इसमें प्रमुख रूप से फास्टैग और यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) का उपयोग होगा। फास्टैग के माध्यम से वाहन टोल प्लाजा पर बिना रुके गुजर सकेंगे, जबकि यूपीआई की सुविधा उन यात्रियों के लिए उपलब्ध होगी जो अपने डिजिटल बैंकिंग ऐप या वॉलेट के जरिए भुगतान करना चाहते हैं। अधिकारियों ने बताया कि इस कदम से टोल प्लाजा पर भीड़ कम होगी, ट्रैफिक की आवाजाही सुचारू बनेगी और टोल लेनदेन की पारदर्शिता सुनिश्चित होगी।

वर्तमान में भारत में फास्टैग की पहुंच 98 प्रतिशत से अधिक हो चुकी है। अधिकांश टोल ट्रांजैक्शन आरएफआईडी आधारित फास्टैग के माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक रूप से हो रहे हैं, जिससे टोल प्लाजा पर वाहन बिना किसी रुकावट और संपर्क रहित तरीके से गुजरते हैं। इस प्रणाली के लागू होने से टोल संग्रह की प्रक्रिया तेज और आसान हो गई है। यदि कोई वाहन बिना वैध और सक्रिय फास्टैग के टोल प्लाजा में प्रवेश करता है और नकद भुगतान करता है, तो उससे निर्धारित शुल्क का दोगुना लिया जाता है। वहीं, जो यात्री यूपीआई के जरिए भुगतान करते हैं, उनसे निर्धारित वाहन श्रेणी के अनुसार 1.25 गुना शुल्क लिया जाता है।

एनएचएआई ने बताया कि वर्तमान में देश भर में 1,150 से अधिक टोल प्लाजा हैं। इन सभी प्लाजा पर डिजिटल भुगतान प्रणाली अपनाने से न केवल संचालन में दक्षता बढ़ेगी, बल्कि यात्री अनुभव में सुधार होगा। इससे टोल प्लाजा पर लंबी कतारें कम होंगी, लेन-देन की प्रक्रिया तेज होगी और यात्रियों को सहजता और सुविधा मिलेगी।

इस दिशा में एक और सुविधा फास्टैग वार्षिक पास है। वर्तमान में वार्षिक पास उपयोगकर्ताओं की संख्या 50 लाख से अधिक हो चुकी है। इस पास के जरिए यात्री 3,000 रुपए की एकमुश्त राशि देकर पूरे एक साल या 200 टोल पार करने तक टोल शुल्क का भुगतान कर सकते हैं। इस पास के उपयोग से बार-बार रिचार्ज कराने की जरूरत समाप्त हो जाती है और यात्रा अधिक सुविधाजनक बनती है। लॉन्च के छह महीनों में 26.55 करोड़ से अधिक लेनदेन इस वार्षिक पास के माध्यम से दर्ज किए गए हैं।

सड़क परिवहन मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि डिजिटल टोलिंग लागू होने के बाद यात्रियों को 'ईज ऑफ कम्यूटिंग' के साथ-साथ आधुनिक और तेज सेवा मिलेगी। यह पहल विशेष रूप से उन राज्यों और हाईवे सेक्शन पर लाभकारी साबित होगी, जहां यात्रियों और वाहनों की संख्या अधिक है। टोल प्लाजा पर डिजिटल भुगतान प्रणाली से न केवल ट्रैफिक का समय बचेगा, बल्कि टोल संग्रह की प्रक्रिया और नियंत्रण भी सरल होगा। सरकार का यह कदम भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली को प्रोत्साहित करने और कैशलेस लेनदेन को बढ़ावा देने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि डिजिटल टोलिंग न केवल यात्रियों को सुविधा प्रदान करेगी, बल्कि राजस्व संग्रह में भी वृद्धि लाएगी और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं को काफी हद तक कम करेगी।

यात्रियों के लिए यह बदलाव नई आदत और तैयारी की मांग करता है। मंत्रालय ने पहले ही यात्रियों को निर्देश दिए हैं कि वे फास्टैग या यूपीआई के माध्यम से टोल भुगतान की सुविधा सुनिश्चित करें। डिजिटल टोलिंग के पूरी तरह लागू होने तक एनएचएआई और राज्य प्रशासन द्वारा विभिन्न जागरूकता अभियान चलाए जाएंगे ताकि हर यात्री इस बदलाव के लिए तैयार हो सके।

विशेषज्ञों का कहना है कि नकद रहित टोलिंग भारत के डिजिटल इंडिया मिशन के तहत भी एक मजबूत कदम है। डिजिटल लेनदेन से डेटा रिकॉर्डिंग अधिक सटीक होगी, जिससे ट्रैफिक और राजस्व का प्रबंधन आसान होगा। साथ ही यह सुरक्षित भी होगा क्योंकि नकद लेनदेन में धोखाधड़ी और चोरी की संभावना अधिक रहती है।

1 अप्रैल 2026 के बाद नेशनल हाईवे पर यात्रा करने वाले सभी यात्रियों को डिजिटल भुगतान अपनाने की आदत डालनी होगी। सरकार का लक्ष्य है कि देश के सभी प्रमुख और माध्यमिक टोल प्लाजा डिजिटल माध्यम से संचालित हों और यात्रियों को तेज, सुरक्षित और पारदर्शी सेवा मिले। इस पहल से आने वाले वर्षों में टोल प्रबंधन के क्षेत्र में तकनीकी बदलाव और नवाचार की दिशा में भी मार्ग प्रशस्त होगा।

इस कदम से डिजिटल भुगतान की पहुंच और स्वीकार्यता बढ़ेगी, जिससे देश में कैशलेस लेनदेन को बढ़ावा मिलेगा। विशेषज्ञ मानते हैं कि फास्टैग और यूपीआई आधारित भुगतान से न केवल टोल संचालन में सुधार होगा, बल्कि यात्रियों को बेहतर अनुभव और सुविधा मिलेगी। नेशनल हाईवे पर डिजिटल टोलिंग पूरी तरह लागू होने के बाद भारत एक आधुनिक और स्मार्ट रोड नेटवर्क की दिशा में एक बड़ा कदम उठाएगा।

फ्रेट लोडिंग को गतिशील बनाने के क्रम में DRM श्री राजू भडके द्वारा GSFC का निरीक्षण

जीएनएस)। माल ढुलाई को और अधिक सशक्त एवं गतिशील बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में, वडोदरा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा आज, दिनांक 20 फरवरी, 2026 को Gujarat State Fertilizers & Chemicals Limited (जीएसएफसी), बाजवा साइडिंग का दौरा किया गया। उनके इस निरीक्षण के दौरान वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्रीमती रिनी भी उपस्थित थीं।

पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने निरीक्षण के दौरान रेल संपर्क, माल ढुलाई अवसंरचना तथा Indian Railways और उर्वरक उद्योग के मध्य समन्वय की समीक्षा की, जिससे देश के विभिन्न राज्यों में उर्वरकों का समयबद्ध परिवहन सुनिश्चित किया जा सके।

मंडल रेल प्रबंधक ने वित्तीय वर्ष 2025–26 में जीएसएफसी के माल लदान प्रदर्शन की भी समीक्षा की तथा जीएसएफएसी–बाजवा साइडिंग पर अब तक के सर्वाधिक 54 रेक के मासिक लदान की उपलब्धि पर संगठन को बधाई दी। उन्होंने रेलवे एवं जीएसएफसी टीमों द्वारा किए गए समन्वित प्रयासों की सराहना की।

श्री भडके ने लॉजिस्टिक प्रक्रियाओं को और अधिक सुव्यवस्थित करने, स्वचालन (ऑटोमेशन) के प्रभावी उपयोग तथा परिचालन योजना में सुधार के माध्यम से माल की शीघ्र निकासी सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने वर्तमान 1.5 रेक प्रतिदिन की लोडिंग क्षमता को बढ़ाकर 2 रेक प्रतिदिन करने की सलाह दी, जिससे आपूर्ति श्रृंखला और अधिक सुदृढ़ हो सके। इस अवसर पर जीएसएफसी के कार्यकारी निदेशक श्री संजीव वर्मा ने कंपनी की गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया तथा वडोदरा मंडल द्वारा समय पर खाली रेक उपलब्ध कराने हेतु आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि बेहतर समन्वय के परिणामस्वरूप कंपनी अपनी लगभग 92 प्रतिशत उत्पादन सामग्री का परिवहन रेल मार्ग से कर सकी।

पश्चिम रेलवे कुशल माल परिवहन व्यवस्था के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराता है। रेलवे और उर्वरक निर्माताओं के बीच सतत समन्वय से देशभर के किसानों को उर्वरकों की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी।

बोईसर-पालघर स्टेशनों के बीच ब्लॉक के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित

जीएनएस)। बोईसर और पालघर स्टेशनों के बीच आर.एच. गर्डर लॉन्च करने के कार्य के लिए 21/22 फरवरी तथा 22/23 फरवरी, 2026 की मध्यरात्रि में ट्रैफिक ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 21/22 फरवरी, 2026 की मध्यरात्रि में अप एवं डाउन लाइनों पर 23:15 बजे से 02:45 बजे तक ब्लॉक लिया जाएगा। इसी प्रकार 22/23 फरवरी, 2026 की मध्यरात्रि में डाउन लाइन पर 02:10 बजे से 05:25 बजे तक ब्लॉक लिया जाएगा।

इन ब्लॉकों के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। प्रभावित ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:-

21 फरवरी, 2026 को निरस्त रहने वाली ट्रेनें:-

1.ट्रेन संख्या 93039 विरार – दहानू रोड लोकल, जो विरार से 21:20 बजे प्रस्थान करती है, निरस्त रहेगी।

2.ट्रेन संख्या 93042 दहानू रोड – विरार लोकल, जो दहानू रोड से 22:45 बजे प्रस्थान करती है, निरस्त रहेगी।

रेगुलेट की जाने वाली ट्रेनें:-

1.ट्रेन संख्या 19037 बांद्रा टर्मिनस – बरौनी एक्सप्रेस, जो 21 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 30 मिनट रेगुलेट होगी।

2.ट्रेन संख्या 69173 विरार – दहानू रोड मेमू, जो 21 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 30 मिनट रेगुलेट होगी।

3.ट्रेन संख्या 19425 बोरीवली – नंदुरबार एक्सप्रेस, जो 21 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 25 मिनट रेगुलेट होगी।

4.ट्रेन संख्या 12298 पुणे – अहमदाबाद एक्सप्रेस, जो 21 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 1 घंटा रेगुलेट होगी।

5.ट्रेन संख्या 22923 बांद्रा टर्मिनस – जामनगर एक्सप्रेस, जो 21 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 50 मिनट रेगुलेट होगी।

6.ट्रेन संख्या 19003 दादर – भुसावल एक्सप्रेस, जो 22 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 40 मिनट रेगुलेट होगी।

7.ट्रेन संख्या 19019 बांद्रा टर्मिनस – हरिद्वार एक्सप्रेस, जो 22 फरवरी, 2026 को यात्रा प्रारंभ करेगी, मार्ग में 40 मिनट रेगुलेट होगी।

मिशन जीरो स्क्रैप के तहत अहमदाबाद मंडल ने स्क्रैप बिक्री में 60 करोड़ रुपये का आंकड़ा किया पार

जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने 'मिशन जीरो स्क्रैप' के अंतर्गत उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान अब तक 61.53 करोड़ मूल्य की स्क्रैप सामग्री का निपटान किया है। यह उपलब्धि मिशन जीरो स्क्रैप के अंतर्गत अहमदाबाद मण्डल की अपने सभी प्रतिष्ठानों एवं इकाइयों को स्क्रैप-मुक्त बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

रेलवे प्रशासन द्वारा अप्रयुक्त, परित्यक्त एवं अप्रचलित सामग्री के सुव्यवस्थित निष्पादन के माध्यम से न केवल राजस्व अर्जित किया जा रहा है, बल्कि परिसंपत्तियों का प्रभावी प्रबंधन एवं स्वच्छ परिसर सुनिश्चित किया जा रहा है।

अहमदाबाद मंडल द्वारा विभिन्न प्रकार की स्क्रैप सामग्री की बिक्री की जा रही है, जिनमें स्क्रैप रेल, अन्य पी-वे (P-Way) सामग्री/स्लीपर, माइल्ड स्टील एवं कास्ट आयरन स्क्रैप, स्क्रैप बैटरियां, प्लास्टिक सामग्री, अपशिष्ट कागज, स्क्रैप लकड़ी तथा तांबा, एल्युमिनियम एवं पीतल जैसे अलौह धातु स्क्रैप शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, परित्यक्त कोच, वैगन एवं लोकोमोटिव भी नियमानुसार बेचे जाते हैं।

'मिशन जीरो स्क्रैप' के अंतर्गत यह उपलब्धि अहमदाबाद मण्डल के कुशल परिसंपत्ति प्रबंधन, बेहतर हाउसकीपिंग तथा स्क्रैप सामग्री की समय पर पहचान एवं निपटान के माध्यम से संसाधनों के इष्टतम उपयोग के सतत प्रयासों को दर्शाता है।

फियो ने एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन के तहत सात नए उपायों का स्वागत किया; कहा कि इन उपायों से एमएसएमई की कॉम्पिटिटिवनेस और ग्लोबल मार्केट एक्सेस बढ़ेगी

जीएनएस)। नई दिल्ली, 20 फरवरी, 2026: फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशन्स (फियो) ने माननीय केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल द्वारा एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन (ईपीएम) के तहत सात नए उपाय शुरू करने का स्वागत किया है, और इस पहल को एमएसएमई की कॉम्पिटिटिवनेस बढ़ाने और भारत की ग्लोबल मार्केट उपस्थिति को बढ़ाने की दिशा में एक बड़ा संरचनागत कदम बताया है।

फियो के अध्यक्ष श्री एस सी रल्हन ने कहा कि यह मिशन उन बुनियादी रुकावटों — क्रेडिट की ज़्यादा लागत, अलग-अलग तरह के ट्रेड फाइनेंस तक सीमित एक्सेस, अनुपालन का बोझ, लॉजिस्टिक्स की कमियां और जानकारी की कमी को दूर करता है जो एमएसएमई निर्यात वृद्धि को रोकती हैं। 'निर्यात प्रोत्साहन' और 'निर्यात दिशा' के तहत नए शुरू किए गए उपाय का लक्ष्य पारंपरिक प्रोत्साहन से आगे बढ़ना और सिस्टेमैटिक कॉम्पिटिटिवनेस बढ़ाने पर फोकस करना है।

2.75 प्रतिशत ब्याज सबवेंशन के साथ एक्सपोर्ट फैक्टरिंग, ई-कॉमर्स एक्सपोर्टर्स के लिए स्ट्रक्चर्ड क्रेडिट फैसिलिटी और बढ़े हुए गारंटी मैकेनिज्म जैसे वैकल्पिक ट्रेड इंस्ट्रूमेंट्स के लिए सपोर्ट से वर्किंग कैपिटल का दबाव काफी कम हो जाएगा। फाइनेंस की कम लागत और बेहतर तरलता चक्र एमएसएमई को कॉम्पिटिटिव प्राइसिंग करने, बड़े ऑर्डर लेने और ओवरसीज बायर्स के साथ अपनी क्रेडिबिलिटी मजबूत करने में मदद करेंगे। शेयर्ड-रिस्क क्रेडिट मैकेनिज्म से भी पहली बार निर्यात करने वालों को बढ़ावा मिलने और प्रोडक्ट तथा मार्केट डाइवर्सिफिकेशन को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। अनुपालन मोर्चे पर, टीआरएसीई (ट्रेड रेगुलेशन, एक्रेडिटेशन एंड कम्प्लायंस इनेबलमेंट) टेस्टिंग और सर्टिफिकेशन कॉस्ट को कुछ हद तक रीइम्बर्स करेगा, जिससे एमएसएमई को तेजी से सख्त होते ग्लोबल स्टैंडर्ड्स को पूरा करने और हाई-वैल्यू रेगुलेटेड मार्केट तक पहुंचने में मदद मिलेगी। फ्लो (फैसिलिटेटिंग लॉजिस्टिक्स, ओवरसीज वेयरहाउसिंग एंड फुलफिलमेंट), जिसमें दुबई में भारत मार्ट जैसे ओवरसीज वेयरहाउसिंग इनिशिएटिव्स के लिए सहायता शामिल है, निर्यातकों को डेस्टिनेशन मार्केट्स के करीब इन्वेंट्री रखने, डिलीवरी टाइमलाइन कम करने और ई-कॉमर्स और फास्ट-मूविंग सेगमेंट्स में ज्यादा प्रभावी ढंग कम्पीट करने में मदद करेगा। एलआईएफटी (लॉजिस्टिक्स इंटरवेंशन फॉर फ्रेट एंड ट्रांसपोर्ट) दूर-दराज के क्षेत्रों में मौजूद एक्सपोर्टर्स के लिए फ्रेट से जुड़े नुकसान को कम करने में मदद करेगा, जिससे रीजनल एक्सपोर्ट ग्रोथ ज़्यादा संतुलित होगी। इनसाइट (इंटीग्रेटेड सपोर्ट फॉर ट्रेड इंटेलिजेंस एंड फैसिलिटेशन) बेहतर मार्केट इंटेलिजेंस और डिमांड मैपिंग के ज़रिए डिस्ट्रिक्ट और क्लस्टर-लेवल के निर्यात इकोसिस्टम को मज़बूत करेगा, जिससे एमएसएमई मार्केट में डायवर्सिफाई कर सकें और कंसंट्रेशन रिस्क कम कर सकें।

श्री रल्हन ने बताया कि तीन खास उपाय — मार्केट एक्सेस सपोर्ट, प्री- और पोस्ट-शिपमेंट क्रेडिट के लिए इंटरेस्ट सबवेंशन, और एक्सपोर्ट क्रेडिट के लिए कोलैटरल सपोर्ट — पहले से ही लागू हैं, जिससे मिशन के तहत एक्टिव इंटरवेंशन की कुल संख्या दस हो गई है। उन्होंने भरोसा जताया कि इन उपायों से ट्रांज़ैक्शन लागत कम होगी, फाइनेंस तक पहुंच बेहतर होगी, कम्प्लायंस रेडीनेस मज़बूत होगी और भारतीय एमएसएमई का ग्लोबल वैल्यू चेन में एकीकरण और गहरा होगा।

श्री रल्हन ने कहा, "एक्सपोर्ट प्रमोशन मिशन लंबे समय की निर्यात क्षमता बनाने की दिशा में एक अहम बदलाव प्रदर्शित करता है। यह एमएसएमई को न केवल ग्लोबल ट्रेड में हिस्सा लेने, बल्कि इंटरनेशनल मार्केट में मुकाबला करने, आगे बढ़ाने और अपनी मौजूदगी बनाए रखने में भी मदद करता है।"

फियो ने सरकार, एक्जिम बैंक, फाइनेंशियल इंस्टीट्यूशन और विदेश में भारतीय मिशन के साथ मिलकर काम करने का अपना वादा दोहराया, ताकि असरदार तरीके से लागू किया जा सके और खासकर जिला स्तर पर ज़्यादा लोगों तक पहुंचा जा सके, ताकि भारत को दुनिया भर में प्रतिस्पर्धी निर्यात पावरहाउस बनने में मदद मिल सके।

रविवार, 22 फरवरी, 2026 को कोई दिवसकालीन ब्लॉक नहीं

पश्चिम रेलवे का वसई रोड एवं विरार स्टेशनों के बीच रात्रिकालीन ब्लॉक

जीएनएस)। रेलपथ, सिगनलिंग तथा ऊपरी उपस्करों के रख-रखाव हेतु पश्चिम रेलवे द्वारा वसई रोड एवं विरार स्टेशनों के बीच शनिवार/रविवार अर्थात 21/22 फरवरी, 2026 की मध्यरात्रि के दौरान अप एवं डाउन धीमी लाइनों पर 00.15 बजे से 04.15 बजे तक चार घंटे का जम्बो ब्लॉक लिया जाएगा। इसके अतिरिक्त, बोरीवली एवं दहिसर स्टेशनों के बीच सभी लाइनों पर 02.10 बजे से 04.10 बजे तक नए फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) के गर्डर लॉन्चिंग हेतु एक मेजर ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ब्लॉक अवधि के दौरान धीमी लाइनों की सभी उपनगरीय ट्रेनों को वसई रोड एवं विरार स्टेशनों के बीच फास्ट लाइनों पर चलाया जाएगा। बोरीवली एवं दहिसर के बीच एफओबी के गर्डर लॉन्चिंग कार्य के कारण कुछ उपनगरीय तथा मेल/एक्सप्रेस ट्रेनें प्रभावित रहेंगी। प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

रेगुलेट होने वाली ट्रेनें:

1)ट्रेन संख्या 19038 बरौनी–बांद्रा टर्मिनस अवध एक्सप्रेस को विरार एवं भायंदर स्टेशनों के बीच 01 घंटा रेगुलेट होगी।

2)ट्रेन संख्या 22946 ओखा–मुंबई सेंट्रल सौराष्ट्र मेल को विरार एवं भायंदर स्टेशनों के बीच 45 मिनट रेगुलेट होगी।

3)ट्रेन संख्या 22904 भुज–बांद्रा टर्मिनस एसी सुपरफास्ट एक्सप्रेस को सूरत एवं विरार स्टेशनों के बीच 20 मिनट रेगुलेट होगी।

4)ट्रेन संख्या 90006 विरार–चर्चगेट लोकल, जो विरार से 03.25 बजे प्रस्थान करती है, को विरार से 15 मिनट विलंब से चलाया जाएगा।

5)ट्रेन संख्या 90018 विरार–चर्चगेट लोकल, जो विरार से 03.40 बजे प्रस्थान करती है, को विरार से 15 मिनट विलंब से चलाया जाएगा।

ब्लॉक के दौरान कुछ उपनगरीय ट्रेनें निरस्त रहेंगी। इस संबंध में विस्तृत जानकारी संबंधित स्टेशन मास्टरों के पास उपलब्ध है।

इसलिए, पश्चिम रेलवे उपनगरीय खंड पर रविवार, 22 फरवरी, 2026 को कोई दिवसकालीन ब्लॉक नहीं रहेगा।

क्रूड ऑयल वायदा में 357 रुपये का ऊछाल: सोना वायदा में 1983 रुपये और चांदी वायदा में 4958 रुपये की वृद्धि

जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 13 से 19 फरवरी के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 3395316.77 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 257070.23 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 3138234.58 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मार्च वायदा 38560 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल साप्ताहिक प्रीमियम टर्नओवर 39238.17 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 188097.59 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा 153750 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 157185 रुपये और नीचे में 150730 रुपये पर पहुंचकर, 152836 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 1983 रुपये या 1.3 फीसदी के ऊछाल के साथ 154819 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 1147 रुपये या 0.92 फीसदी की तेजी के संग 126124 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 152 रुपये या 0.97 फीसदी की मजबूती के साथ सप्ताह के अंत में 15830 रुपये प्रति 1 ग्राम बंद हुआ। सोना-मिनी मार्च वायदा 152588 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 155000 रुपये और नीचे में 148678 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 2320 रुपये या 1.54 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 153008 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 154871 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 156730 रुपये और नीचे में 151080 रुपये पर पहुंचकर, 153663 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 1111 रुपये या 0.72 फीसदी की तेजी के संग 154774 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 239626 रुपये के भाव पर खूलकर, 248786 रुपये के उच्च और 226076 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 236435 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 4958 रुपये या 2.1 फीसदी की बढ़त के साथ 241393 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 1471 रुपये या 0.6 फीसदी बढ़कर 244795 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 1245 रुपये या 0.51 फीसदी की तेजी के संग सप्ताह के अंत में 244712 रुपये प्रति किलो हुआ। मेटल वर्ग में 39724.47 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 46.05 रुपये या 3.82 फीसदी औंधकर 1160.25 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 65 पैसे या 0.2 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ सप्ताह के अंत में 324 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा सप्ताह के अंत में 1.5 रुपये या 0.49 फीसदी घटकर 306.2 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि सीसा फरवरी वायदा 15 पैसे या 0.08 फीसदी के सुधार के साथ 187.95 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ।

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 257070 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 3138234 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 188097 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 38560 पॉइंट के स्तर पर

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 29231.34 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 5699 रुपये के भाव पर खूलकर, 6097 रुपये के उच्च और 5628 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 357 रुपये या 6.26 फीसदी की मजबूती के साथ 6058 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मार्च वायदा सप्ताह के अंत में 357 रुपये या 6.26 फीसदी की तेजी के संग 6060 रुपये प्रति बैरल के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा नैचुरल गैस मार्च वायदा सप्ताह के आरंभ में 279.4 रुपये के भाव पर खूलकर, 283.7 रुपये के उच्च और 261.8 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 284.2 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 12.8 रुपये या 4.5 फीसदी लुढ़ककर 271.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मार्च वायदा सप्ताह के अंत में 12.7 रुपये या 4.47 फीसदी औंधकर 271.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा सप्ताह के आरंभ में 965 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 11.5 रुपये या 1.19 फीसदी गिरकर 955.1 रुपये प्रति किलो हुआ।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 102177.14 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 85920.45 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 34173.41 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 2584.37 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 184.10 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 2693.38 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 12256.26 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 16884.79 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 13.18 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 7394 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 40068 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 12721 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 148384 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 27368 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 5957 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 6567 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 24881 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 14967 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 10100 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मार्च वायदा 38560 पॉइंट पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 38560 के उच्च और 38560 के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 117 पॉइंट बढ़कर 38560 पॉइंट के स्तर पर बंद हुआ।